thearyasamaj.org

नवम्बर-2014 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 6 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

नवम्बर-२०१४

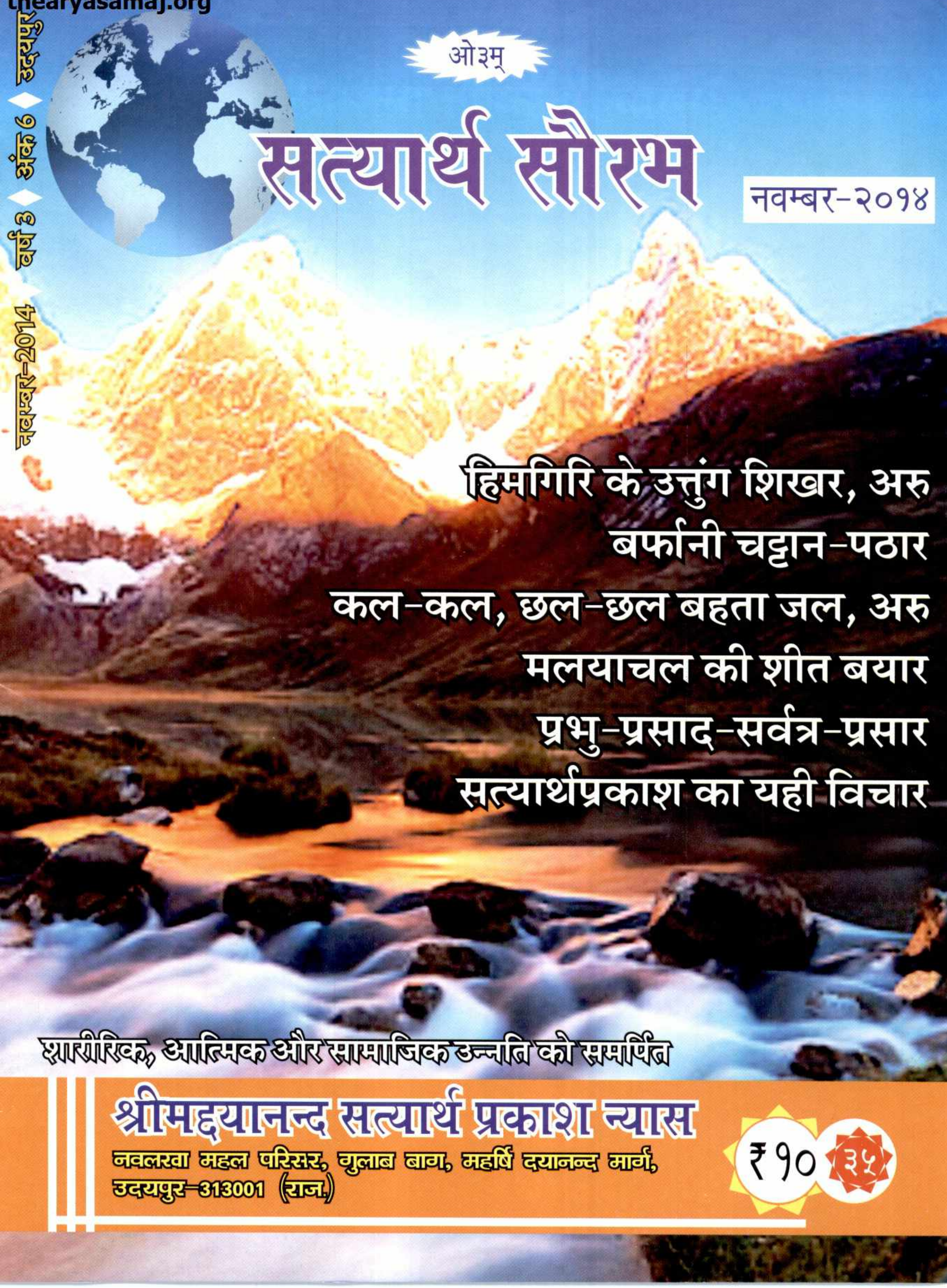

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर, अरु
बर्फानी चट्टान-पठार
कल-कल, छल-छल बहता जल, अरु
मलयाचल की शीत बयार
प्रभु-प्रसाद-सर्वत्र-प्रसार
सत्यार्थप्रकाश का यही विचार

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ३५

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
मार्गशीर्ष कृष्ण प्रथमा
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

November- 2014

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २१

हलचल २२

०४ वेद सुधा
०८ महर्षि के चार विशेष उपकार
१२ थाइरॉइड के संकेत
१३ कल्पसाहित्य का योगदान
१६ गीता का कर्म सन्देश
१८ आनन्द के क्षण
१९ १७वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
२३ वेद परिचय
२५ राशि फल और समाचार पत्र
२६ सत्यार्थप्रकाश पहेली-१०
२७ महर्षि दयानन्द का हिन्दी को योगदान
२८ कथा सरित
२९ वैवाहिक जीवन
३० नारी सम्मान

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ६

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

thearyasamaj.org

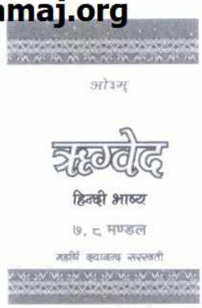

ओ३म्

वेद सुधा

स्वराज्य बने सुराज्य

ओ३म् इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निःशशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्।। -ऋग्.१/८०/१

डॉ. उदय नारायण गंगू

शब्दार्थः- इत्था- इस प्रकार से, इस हेतु से, हि- निश्चय से, इत्- ही, मदे- आनन्द में, सोमे- ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाले में, ब्रह्मा- चारों वेदों के जानने वाला महान् ज्ञानी, चकार- करे, वर्धनम्- बढ़ती को, शविष्ठ- अत्यन्त बल से, वज्रिन्- हे शक्तिशालिन् (शस्त्रास्त्र विद्या से सम्पन्न सभापति), ओजसा- अपने पराक्रम से, पृथिव्याः- पृथिवी के, निःशशा- दूर कर दे, अहिम्- मेघ को, अर्चन्-अनु- अनुकूलता से सत्कार करता हुआ, स्वराज्यम्- अपने राज्य की।

महर्षि दयानन्द प्रस्तुत ऋचा के भावार्थ में लिखते हैं- **मनुष्यों को चाहिए कि चक्रवर्ती राज्य की सामग्री इकट्ठी कर और उसकी रक्षा करके विद्या और सुख की निरन्तर वृद्धि करें।**

उपर्युक्त मन्त्र में 'स्वराज्य' शब्द विशेष विचारणीय है। वर्त्तमान विश्व में अधिकतर प्रजातन्त्रात्मक शासन हैं। प्राचीन समय में राजतन्त्र था। उपर्युक्त मंत्र का आदेश है कि यदि कोई राजा अपने राज्य को बढ़ाना चाहे, या उसको सुन्दर बनाकर उसमें आनन्द पाना चाहे तो उसे तीन बातों का ध्यान रखना चाहिएः-

१. जैसे ब्रह्मज्ञानी अपने ज्ञान को चारों वेदों के द्वारा बढ़ाता है, वैसे ही वह अपने राज्य का ज्ञान प्राप्त करके उसे उन्नत करे।
२. पृथ्वी के साम्राज्य को पाने के लिए वह अपने मन, आत्मा और बुद्धि के साथ शारीरिक शक्ति को बढ़ाए।
३. जैसे सूर्य मेघ को निःशेष दूर करता है, वैसे ही अपनी श्रद्धा के बल से स्वराज्य का सम्मान करके, उसे सुराज्य बनाये।

महामना श्री बाल गंगाधर तिलक ने स्वराज्य के महत्व को भली भाँति समझा था। निश्चयतः उन्होंने स्वराज्य का सन्देश महर्षि दयानन्द से पाया था और महर्षि ने वेद से। श्री तिलक जी ने घोषणा की थी कि 'स्वराज्य मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है।' भारत-भक्त तिलक के ये शब्द भारतवासियों के कर्ण-कुहरों में गूँज उठे। फलतः सभी की धमनियों का रक्त गरम हो उठा। भारतीय वीरों ने अपने प्राणों को बलिवेदी पर चढ़ाकर देश को स्वतन्त्र किया। १५ अगस्त सन् १९४७ से भारतवासी परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त होकर स्वराज्य में साँस ले रहे हैं।

वर्तमान समय में विश्व के अनेक परतन्त्र देश स्वतन्त्र होकर सम्मान का जीवन जीने लगे हैं। १२ मार्च सन् १९६८ से मॉरीशस भी एक स्वतन्त्र देश है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मॉरीशस को लघु भारत की संज्ञा से अभिहित किया था। स्वराज्य मिलने पर मॉरीशस विद्या की ओर द्रुत गति से अग्रसर हुआ। देखते-देखते यह देश सुख-समृद्धि के शिखर पर आसीन हो गया।

'स्वराज्य' तथा 'स्वतन्त्र' में भेद है। 'राज्य' शब्द प्रकाश का प्रतीक है और 'तन्त्र' शासन का। शासन करने के लिए प्रकाश का होना आवश्यक है। यह प्रकाश ज्ञान से प्राप्त होता। उपर्युक्त मन्त्र का यही सन्देश है कि सभी मनुष्य ज्ञान प्राप्त करें। राजा वा शासक को विशेषतया राजनीति का ज्ञान पाना परमावश्यक है।

राजा या शासक को बाज पक्षी की भाँति धन, बल, वीरता, दूरदर्शिता आदि से समृद्ध होना चाहिए, तभी वह शत्रुओं का नाश कर सकता है। ऋग्वेद का उपर्युक्त मन्त्र कह रहा है कि हे इन्द्र के समान ऐश्वर्यशालिन्! तू पृथ्वी पर ही आकाश को उतार कर सूर्य की भाँति मेघरूपी शत्रुओं का नाश कर दे। जैसे जल बहकर कूड़े कर्कट को दूर करता है, वैसे ही पृथ्वी के दोषों को दूर कर दे। जब घने बादल उमड़-घुमड़ कर आते हैं और सूर्य के ओज को भी ओट में डाल देते हैं, तब सूर्य अन्दर-ही-अन्दर उन का भेदन करता हुआ, उनको जल की भाँति पिघला दे, ताकि वे तेरे मित्र बनकर तेरी शरण में आ जायें, जिससे तेरे राज्य का विस्तार हो और तू सूर्य के समान पृथ्वी पर चमक उठे।

राजा को चाहिए कि वह असंख्यात शुभ कर्मों द्वारा अपने प्रकाश को फैलाकर विविध प्रकार के ऐश्वर्य को अर्जित करके अपनी प्रजाओं की रक्षा करते हुए निरन्तर अपने स्वराज्य का मान करके उत्तम राज्य की स्थापना करे।

प्रजा भी इसी प्रकार के राजा की चाहना करती है, जो शिकारी की भाँति अपने शत्रुओं पर दृष्टि रखता हो, अपनी उत्तम बुद्धि से

thearyasamaj.org

कपटियों का नाश करता हो तथा अपने राज्य का आदर करता हुआ उसको उत्तम बनाता है।

उपर्युक्त ऋचा उपदेश दे रही है कि राजा शक्तिशाली हो। यह तभी सम्भव है, जब राजा की सेनाओं की शक्ति इतनी हो कि असंख्य जलपोतों को, हवाई मार्गों से चलने वाले वायुपोतों को तथा पृथ्वी पर चलने वाली सेनाओं को अपने शस्त्रास्त्रों से वह वश में करते हुए अपने राज्य में सुराज्य की स्थापना कर सके। राजा के अन्दर इतनी चेतनता हो, इतनी ओजस्विता हो कि सभी उसके अनुशासन का पालन करें।

सुराज्य की स्थापना में प्रजाओं के भी कर्तव्य हैं। उन्हें चाहिए कि वे अपने ऐसे राजा के प्रति सद्भावना रखें, जो अपने असंख्य

शुभ कर्मों से उनकी सहायता करता है। उन्हें विश्वास होना चाहिए कि वह केवल राजा ही नहीं, बल्कि ब्रह्मज्ञान के साथ-साथ अन्नादि से भी समृद्ध है। राजा-प्रजा परस्पर विरोध न करके छोटे-बड़े सब प्रेम से रहें, तभी सुख की प्राप्ति हो सकेगी।

ऋग्वेद की इस ऋचा ने जो उपदेश, आदेश और सदुपदेश दिया उसे रघुकुल के राजाओं ने शिरोधार्य किया था। राम के पूर्वज महाराज रघु का शौर्य, बल, पराक्रम ऐसा ही था। उनके अनुशासन में रहकर सभी उनके मित्र बनकर उनका आदर-सत्कार करते थे। राजा रघु को अपने अश्वमेध यज्ञ में मैत्री भाव से उपहार रूप में अमूल्य धन प्राप्त हुआ था, जिसका उन्होंने सर्वस्व दान कर दिया था। यही सुराज्य का अनुपम उदाहरण है।

स्वराज्य के बारे में वेद ने बड़ी सुन्दर कल्पना की है। सूर्य का तेज इतना महान् है कि जब वह मेघ को काटने के लिए अपना तेज डालता है, तब भयभीत हुई बिजली थर-थर काँपती है। बिजली का चमकना उसके भयभीत होने का प्रतीक है।

ऐसे ही राजा सूर्य की भाँति चमकता हुआ अपनी सहसेनाओं के साथ युद्ध-भूमि में छलियों एवं दम्भियों का नाश करके अपने राज्य को बढ़ाये और समृद्ध करे।

स्वराज्य में मानवमात्र ही नहीं, प्रत्युत इसमें स्थावर - जंगम सभी आते हैं। राजा को चाहिए कि स्थिर रहने वाली प्रकृति के साथ ही पशु-पक्षियों की भी रक्षा करे, ताकि मानवों को सबसे लाभ होता रहे।

शासक-प्रशासकों को उसी तरह नियम पर चलते रहने चाहिए, जैसे सभी ग्रह-उपग्रह सूर्य के प्रभाव से नियमित चलते हैं। **प्रशासकगण अपने पद का दुरुपयोग न करें, निर्धनों के बल पर अपना महल खड़ा न करें, अन्यथा सुराज्य की स्थापना कदापि हो न सकेगी।**

उत्तम विद्यावान्, तन, मन और आत्मा से बलवान्, श्रेष्ठ कर्म करने वाले पुरुषार्थी जन, अपने उत्तरदायित्व को ईमानदारी से निभाने वाले कर्मचारीगण, वेदों के प्रवक्ता, शुभ गुणों से युक्त, शुद्ध, बुद्ध, तपस्वी आत्मायें एवं कृषि और वाणिज्य से देश को धन-धान्य से सम्पन्न करने वाले वैश्य जन स्वराज्य को सुराज्य बनाने में योगदान देते हैं। सुराज्य में बसने वाले जन ही आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं। सुराज्य के अभिलाषी को सर्वप्रथम अपनी भूमि के प्रति अपनत्व की भावना रखनी चाहिए। शासकों को कर्मवीरों, युद्धवीरों, दानवीरों, धर्मवीरों और विद्यावीरों का सम्मान करना चाहिए। न्यायाधीशों को न्यायकारी परमात्मा की भाँति न्याय करना चाहिए। वैदिक राज्य की स्थापना करने का अनवरत प्रयास होते रहना चाहिए।

- डॉ. उदयनारायण गंगू
ओ.एस.के., आर्य रत्न (मॉरीशस)

❑❑❑

सच्चे सुख के मुख्य आधार।
विनम्रता, उदारता,
दया और परोपकार॥
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

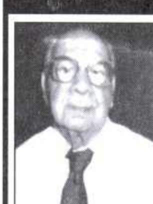

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

thearyasamaj.org

आत्म निवेदन

जहालत की इन्तहां

गत मास एक दिन एक समाचार पत्र में बड़ी विचित्र खबर पढ़ने को मिली। झारखंड के एक गाँव में स्वयं पिता व निकट सम्बंधियों की सहमति से एक १८ वर्ष की लड़की का विवाह एक कुत्ते से करा दिया गया। पहले तो सोचा कि कई बार लोग इसलिए अजीबोगरीब कार्य कर देते हैं ताकि वे प्रसिद्ध हो जायँ, अखबारों में उनकी चर्चा हो, वे टेलीविजन पर छा जायँ, परन्तु इस परिवार की पृष्ठभूमि ऐसी न थी कि वे ऐसी चालाकी भारी बात सोच भी सके। एक बात और, यह परिवार नितान्त अशिक्षित व पिछड़ा भी नही था कि घटनाओं की प्रकृति का तनिक भी ज्ञान न हो। फिर बात क्या थी? वस्तुतः अमन मुण्डा (लड़की का पिता) को यह विश्वास हो गया था कि उसकी बेटी बुरे शाप से ग्रसित है। इसका उपाय यह बताया गया कि उसकी शादी एक कुत्ते से करा दी जाय जिससे वह शाप मुक्त हो सके। सभी गाँव वालों का दबाब था कि मुंदा (लड़की) का विवाह कुत्ते से करा दिया जावे, जिस पर उसका पिता सहमत हो गया। पूरे विधि-विधान से यह विवाह हुआ। यहाँ तक कि वर अर्थात् कुत्ते को एक शानदार कार में बिठाकर शादी के स्थान पर ले जाया गया। सभी रीति-रिवाजों को अपनाया गया।

इस खबर को पढ़कर मन विषाद से भर गया। मानव जीवन और पशु जीवन में फर्क क्या है? वह फर्क है विवेक का। बाकी सारे काम खाना-पीना , सोना आदि तो सभी प्राणी करते हैं। पर वे विवेक के अभाव में अपनी उन्नति का पथ नहीं तलाश पाते। अन्य योनियों की तो मजबूरी है पर अपने अमृत पुत्र मानव को तो परम पिता परमात्मा ने अत्यंत कृपा कर विवेक प्रदान किया है ताकि वे करणीय-अकरणीय में विभेद कर सकें।

पर आज का इंसान हर चीज के पीछे भाग रहा है, पर नीर-क्षीर विवेक के प्रति उत्सुक नही है। आज शिक्षा का तो विस्तार हो रहा है पर बौद्धिकता का नहीं। परिस्थितियों, घटनाओं पर तर्क पूर्ण विचार को आवश्यक नहीं माना जाता है। विशेष रूप से जहाँ आस्था का प्रश्न आता है वहाँ हर प्रकार की मूर्खता चिन्तन के क्षेत्र से बाहर हो जाती है। एक तरफ जहालत से भरे उक्त प्रकार के कृत्य हमारे सामने आते हैं, वहीं नरबलि, पशुबलि जैसे क्रूरतम काण्ड घटते रहते हैं। स्वयं सेवी संगठन भी इस बौद्धिक सर्वनाश को रोकने के प्रति समुत्सुक नहीं हैं। ऐसे में आर्य समाज जैसे बुद्धिवादी संगठन से इस दिशा में जन-जागरण की अपेक्षा की जाती है।

शाप मुक्त करने अथवा अन्य ऐसे ही प्रयोजन के लिए उक्त वर्णित मुर्खता कोई इकलौता कृत्य नहीं है। कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं -

१८ वर्ष के लड़के सलवा कुमार ने दो कुत्तों को पत्थर फैंक-फैंक कर मार दिया और उनकी लाश को पेड़ पर लटका दिया। निःसंदेह यह क्रूर कृत्य था। पर यहाँ बात अंधविश्वास की है। इस घटना के पश्चात् सलवा के हाथ तथा पाँव लकवाग्रस्त जैसे हो गये। सुनने की क्षमता भी कम हो गयी। उसने अपने दुःखों का कारण और उपाय एक ज्योतिषी से पूछा- ज्योतिषी ने कहा कि उसने कुत्तों को मारा था अतः उनका शाप सलवा को लगा है और यह तब तक

thearyasamaj.org

सलवा का पीछा नहीं छोड़ेगा जब तक कि सलवा किसी कुतिया से शादी नही कर लेता। चुनाचे सलवा ने नवम्बर १९९६ में सेल्वी नामक कुतिया से शादी कर ली।

फरवरी १९९८ में पूर्वी भारत के एक गाँव में एक शिशु का विवाह पड़ोस के कुत्ते के साथ इस कारण कर दिया गया कि गाँव वालों का विश्वास (अन्धविश्वास) था कि इससे शिशु को जंगली जानवर नहीं खायेंगे।

जून १९९२ में कोलकाता के निकट संथाल जनजाति की ८ वर्षीय कन्या का विवाह कुत्ते के साथ कर दिया।

कुत्ते ही ऐसी अंधविश्वास से भरी शादियों के केंद्र में रहे हों ऐसा नही है, इस दौड़ में मेढ़क और साँप भी शामिल हैं।

जून १९९५ में भुवनेश्वर में एक महिला बीमार पड़ी तो उसका मानना था कि वह एक साँप को दूध पिलाने से ठीक हुई। इसलिए उसने साँप से शादी कर ली। इस शादी में २००० अतिथि सम्मिलित हुए। शानदार भोज दिया गया।

जनवरी १९९६ में सात वर्ष की दो लड़कियों का विवाह दो मेढ़कों के साथ कर दिया गया। कारण कि पल्लीपुदुपेट गाँव में एक रहस्यमयी बीमारी फैल गयी थी इसे रोकने के लिए विग्नेश्वरी तथा मैशाकिन्नी नामक लड़कियों का विवाह मेढ़कों के साथ धूमधाम से करा दिया गया। दो अलग-अलग मंदिरों में सैकड़ों गाँव वासियों के समक्ष ये विवाह संपन्न हुए। कुछ गाँव वाले वर पक्ष के हो गए तो कुछ वधू पक्ष के।

अंधविश्वास से ग्रस्त इस अभागे देश में केवल यह उपर्वर्णित घटनाएँ ही नही असंख्य घटनाएँ इस प्रकार की होती रहती हैं। हम कौतूहल के साथ इन्हें पढ़कर विस्मृत भी कर देते हैं, हम इन्हें चिन्ता की दृष्टि से नही देखते क्योंकि हमें लगता है कि इससे समाज को कोई खतरा नहीं। पर हम यह भूल जाते हैं कि विवेक और तर्क को तिलांजलि दे देना एक ऐसी भूल है जो एक महामारी की तरह समाज में फैल जाती है। यह संभव नहीं कि एक प्रकार के अंधविश्वास को हम हलके से ले लें और दूसरे को अन्य प्रकार से। अगर शोभन सरकार के स्वप्न पर हम विरोध का मानस नहीं बना पाते या उसे समाज के लिए घातक नहीं मानते तो इसी अंधविश्वास के विस्तार पर पशुबलि अथवा नरवलि जैसे जघन्य कृत्यों की भर्त्सना कर पायेंगे? दोनों का उत्स अंधविश्वास है।

अभी हाल ही में रायगढ़ खर्राघाट के पास स्थित केलो नदी में पानी में तैरती हुई एक बच्ची की लाश मिली थी जिसकी उम्र लगभग ३ से ४ माह थी। पानी में तैरती इस बच्ची की लाश में यह देखा गया कि उसके एक हाथ में लाल चुनरी का टुकड़ा बँधा हुआ था और शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं थे। मृत बच्ची काला कपड़ा पहने हुए और काली बिंदी लगाये हुये मिली थी। स्पष्टतः यह नरबलि का जघन्य कृत्य था ।

जब तक सभी प्रकार के अंधविश्वासों के विरुद्ध चैतन्य नहीं होंगे, कभी सामान्य तो कभी क्रूर कृत्य होते रहेंगे। समाज में अंधविश्वास के विरुद्ध मानस पैदा नहीं करेंगे तो इससे कभी निस्तार नहीं मिलेगा।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

□□□

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी; मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमल सूद, पाण्डाघाट, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर

thearyasamaj.org

महर्षि के मानव-मात्र पर चार विशेष उपकार

खुशहाल चन्द्र आर्य

वैसे तो महर्षि दयानन्द के मानव-मात्र पर सैंकड़ों नहीं सहस्त्रों उपकार हैं, जिनकी गिनती करना असम्भव है। इस लेख में केवल चार उपकारों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं, जिनको हम लोगों ने अन्दाज पाँच हजार वर्षों से प्रायः भुला दिया था। जो इस भाँति हैं:-

१. सब एक धर्म, वैदिक धर्म ही है:- सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत तक एक ही धर्म ''वैदिक धर्म'' को ही विश्व के सभी लोग मानते रहे। अन्दाज पाँच हजार वर्ष पूर्व महाभारत का भीषण युद्ध हुआ। विश्वभर के सभी राजा, महाराजा, योद्धा, विद्वान् व आचार्य युद्ध में काम आ गये। इस स्थिति में अविद्वान्, स्वार्थी लोग ही विद्वान् समझे जाने लगे और इन स्वार्थी लोगों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत-मतान्तर प्रचलित कर दिये जिससे लोग भ्रमित हो गये और विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड़ का ही राज्य स्थापित हो गया और वैदिक धर्म प्रायः लुप्त हो गया और लोगों ने अन्धविश्वास, पाखण्ड रूपी अधर्म को ही धर्म मान लिया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में कठोर तपस्या करके, अनेक दुःखों व कष्टों को सहकर, अपने सद्गुरु स्वामी विरजानन्द की गोद में अन्दाज तीन साल बैठकर महाभाष्य व अष्टाध्यायी का गहन अध्ययन करके, वेदों के सही अर्थ निकालकर विश्व में वेदों का पुनः प्रकाश किया और करीब पाँच हजार वर्षों से जो लोग वैदिक धर्म को भूल गये थे और अनेक मत-मतान्तरों में धँस गये थे, उनको पुनः वैदिक धर्म में लाकर उनके जीवन को सफल बनाने के लिए एवं उनके जीवन में सुख व शान्ति लाने के लिये जो वैदिक धर्म पर चलने से ही सम्भव है, उनको वैदिक धर्म पर चलने की प्रेरणा दी और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर, जीव को मनुष्य योनि में भेजता है। महर्षि दयानन्द के आने से पहले, लोग अनेक मत-मतान्तरों में बँटे हुये थे, उनके ग्रन्थ भी अलग-अलग थे जो सभी मनुष्यकृत थे। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी होने से उनके बनाये ग्रन्थों में भी भिन्न-भिन्न वादों का होना आवश्यक है। परन्तु महर्षि ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर विश्व को यह बतलाया कि मानव-मात्र का एक ही धर्म 'वैदिक धर्म' है और एक ही धर्म ग्रन्थ 'वेद' हैं। इन्हीं को मानने से विश्व कल्याण है अन्यथा परस्पर भेद-भाव रहना निश्चित है।

२. सबका एक ही उपास्य देव ''ओ३म्'' है:- महाभारत युद्ध से पहले एक ही धर्म 'वैदिक धर्म' था और एक ही उपास्य देव 'ओ३म्' था। महाभारत के बाद अज्ञानी, स्वार्थी लोगों ने जहाँ अनेक मत-मतान्तर चला दिये, वहीं अनेक उपास्य देव भी चला दिये। अनेक मतों में शैव, वैष्णव व शाक्त मुख्य थे। शैवों ने शिव (महादेव) को, वैष्णवों ने विष्णु को और शाक्तों ने दुर्गा, काली, भैरव आदि को अपना उपास्य देव मानना आरम्भ कर दिया।

ब्रह्मा को सृष्टिकर्त्ता, विष्णु को पालनकर्त्ता और शिव को संहारकर्त्ता बतलाकर तीनों को उपास्य देव मान लिया। श्रीराम और श्रीकृष्ण को विष्णु का अवतार बतलाकर ईश्वर के रूप में ही उपास्य देव मानना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार अनेक देवी-देवताओं की उपासना होनी आरम्भ हो गई। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में यह लिखकर भ्रम समाप्त कर दिया कि इन सभी देवताओं के नाम ''ओ३म्'' के ही गुणों व कर्मों के नाम हैं, इसलिये एक ''ओ३म्'' की उपासना करने से ही सभी देवताओं की उपासना हो जाती है। 'ओ३म्' ही सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है, वही पालन करने वाला है और वही संहार करने वाला भी है इसलिये ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों ही देव 'ओ३म्' में समाहित हो जाते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में 'ओ३म्'

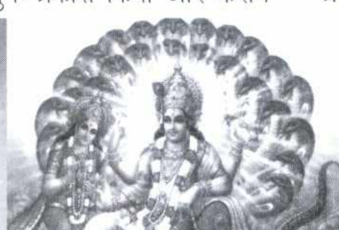

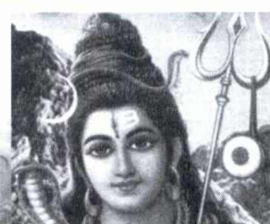

thearyasamaj.org

के एक सौ नामों का वर्णन है। महर्षि ने बताया कि किसी अन्य देवता की उपासना न करके केवल 'ओ३म्' की ही उपासना, उसके गुणों का वर्णन करते हुए, उसके गुणों को अपने जीवन में धारण करने का सकंल्प करते हुए सन्ध्या द्वारा करनी चाहिए। यह बतलाकर महर्षि ने सभी मनुष्यों को जोड़ने का काम करके मनुष्य-मात्र पर बड़ा उपकार किया है।

३. हमारा एक ही नाम 'आर्य' था:- सृष्टि के आरम्भ में जितने भी मनुष्य थे, वेद ने उनको 'आर्य' नाम से सम्बोधित किया है और वेदों में लिखा है 'अहं भूमिम् अददाम् आर्य्याय' इसका अर्थ है कि मैं ईश्वर, धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वालों के लिए पृथ्वी के राज्य को देता हूँ यानि उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव वाले आर्य ही इस पृथ्वी का आनन्द ले सकते हैं और वेदानुकूल चलते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ में केवल दो किस्म के ही मनुष्य थे। गुण, कर्म, स्वभाव से अच्छे व्यक्तियों को 'आर्य' कहा जाता था और इसके विपरीत खराब चाल, चलन व व्यवहार वालों को अनार्य कहा जाता था। अनाड़ी शब्द अनार्य का ही विकृत रूप है। महाभारत तक यही प्रथा चलती रही। रामायण, महाभारत की फिल्मों में हमने देखा है कि सीता ने श्री राम को और द्रोपदी ने अर्जुन को सदैव 'आर्य पुत्र' के नाम से सम्बोधित किया है।

महाभारत तक हमारा नाम 'आर्य' और हमारे देश का नाम 'आर्यावर्त्त' था। इसके बाद मुसलमानों ने सिन्धु नदी का अपभ्रंश करके हमें 'हिन्दु' और हमारे देश को हिन्दुस्तान कहना आरम्भ कर दिया गया। अंग्रेजों के आने पर हमें ''इण्डियन'' और हमारे देश को 'इण्डिया' कहना आरम्भ कर दिया। महर्षि दयानन्द का हमारे ऊपर बड़ा ऋण है कि उन्होंने हमारा प्राचीन नाम 'आर्य' हमें याद दिला दिया। वेद प्रचार करने तथा परोपकारी कार्यों को करने के लिए महर्षि ने 'आर्य समाज' की स्थापना सन् १८७५ में मुम्बई में की, इससे भी विश्वभर में वेद प्रचार तथा मानव कल्याण के कार्य काफी मात्रा में हो रहे हैं। यह भी महर्षि का हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है।

४. अभिवादन करने का एक ही तरीका 'नमस्ते' है:- वैदिक धर्म का प्रचार जब तक रहा, तब तक सभी लोग परस्पर मिलने पर एक ही अभिवादन ''नमस्ते'' करते थे। बाद में वैदिक धर्म लुप्त प्रायः होने से अज्ञानतावश श्रीराम और श्रीकृष्ण को स्वार्थी लोगों ने ईश्वर का अवतार बताना आरम्भ कर दिया, तब से जै श्रीराम, जै श्रीकृष्णा, राम-राम आदि अभिवादन के रूप में कहना आरम्भ कर दिया। मुसलमान भाई 'वालेकुम सलाम' 'सलाम वालेकुम' अभिवादन में कहते हैं।

अंग्रेज भाई गुड़मोर्निंग, गुड़नाईट, समय के अनुसार कहकर

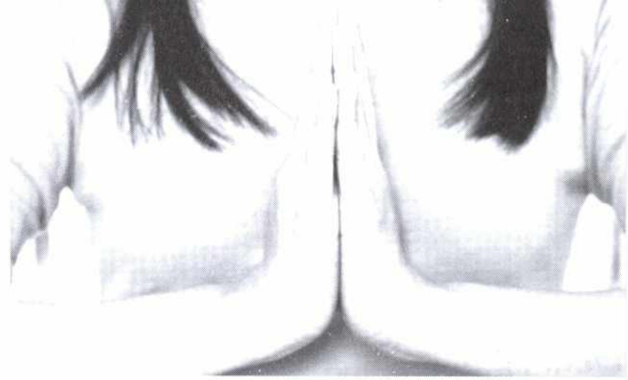

अभिवादन करते हैं, जो अपने हृदय का प्रेम-प्रदर्शन करने का उपयुक्त तरीका नहीं जान पड़ता है। महर्षि ने वेदों के आधार पर वही प्राचीन अभिवादन शब्द 'नमस्ते' को उपयुक्त बताया और आर्य समाजियों को परस्पर मिलने पर 'नमस्ते' का प्रयोग करने का आग्रह किया। आर्य जगत् में एक वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् पं. अयोध्या प्रसाद वैदिक रिसर्च स्कॉलर हुए हैं, जिनका अधिक जीवन कलकत्ता में ही बीता था। उनको आर्य समाज की तरफ से सन् १९३३ में शिकागो में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में भेजा गया था। वहाँ चर्चा का विषय अभिवादन के लिए उपयुक्त शब्द क्या होना चाहिए, यही था। सभी देश वालों ने अपने-अपने अभिवादन शब्द के सम्बन्ध में बताया। **अन्त में पं. अयोध्या प्रसाद जी ने 'नमस्ते' की इतनी सुन्दर व स्टीक व्याख्या की, जिसको सभी देश वालों ने 'नमस्ते' को ही अभिवादन के रूप में सबसे अधिक उपयुक्त समझा और इसकी महत्ता को सभी ने स्वीकार किया।** महर्षि का अभिवादन में 'नमस्ते' का पुनः प्रचलन करवाना, मनुष्य-मात्र पर एक बहुत बड़ा उपकार है।

गोविन्दराम आर्य एंड सन्स
□□□ **१८० महात्मा गाँधी रोड, दो तल्ला, कोलकाता-७००००७**

शोक समाचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की ज्येष्ठ पुत्री एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मंत्री स्वर्गीय श्री सूर्यदेव जी की पत्नी का निधन १५ अक्टूबर २०१४ को हो गया। इस दुःखद अवसर पर न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार अपनी संवेदना प्रकट करता है और प्रभु से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को संबल प्रदान करने हेतु श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़ ने संरक्षक सदस्यता (रु. ११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद

thearyasamaj.org

कागा सब तन खाइयो

एक रिपोर्ट में कहा गया है कि विगत कुछ समय से उत्तर भारत में विशाल क्षेत्र से गिद्ध और चील जैसे पक्षी, जो भारी संख्या में स्थान-स्थान पर दिखाई दिया करते थे, लुप्त हो रहे हैं। चीलों और गिद्धों को हम प्रायः आकाश की ऊँचाइयों में उड़ते देखते रहे हैं। जंगलों और मैदानों में मुर्दा जानवरों का मांस खाते हुए और बड़े बड़े समूहों में भी बैठे देखते रहे हैं, किन्तु अब कुछ समय से यह पक्षी बहुत कम देखने में आ रहे हैं। **ये गिद्ध और चीलें कहाँ चली गईं?**

ये पक्षी किस कारण लुप्त हो गए- अभी हम इसका पता लगा भी नहीं पाये थे कि सुबह से शाम तक हमारे घर में शोर मचाते हुए कौए भी गायब होने लगे। उत्तरी भारत में बहुतायत से पाया जाने वाला यह पक्षी अब बहुत ही कम संख्या में दिखाई दे रहा है। कुछ समय पहले तक सूर्य उदय होने पर जब हमारी आँख खुलती तो सबसे पहले हमारे कानों में कौए की आवाज ही पड़ती या कौए की आवाज के साथ ही हम नींद से जागते। कागा हमारी मुंडेर पर बैठा होता और काएँ-काएँ का शोर मचाता। कई बार हम रोटी के एक टुकड़े अथवा किसी अन्य खाद्य सामग्री के लिए कई कौओं को आपस में लड़ते और छीना झपटी करते हुए देखते। अब कुछ समय से यह सब देखने में नहीं आ रहा है। कौए हमारा साथ छोड़ते जा रहे हैं जैसे कुछ समय पहले चीलें और गिद्ध गायब हो गए थे।

मैं इस रिपोर्ट के पहले भाग पर ही पहुँचा कि मानव अस्तित्व की ओर तेजी से बढ़ रहे बड़े खतरे की गंभीर चिन्ता ने मुझे घेर लिया। नजर उठाकर देखता हूँ तो मेरे आँगन और घर की दीवार पर आज कोई कागा नहीं है। सामने मैदान में जो नीम का वृक्ष खड़ा है, उस पर भी कोई कागा नहीं है, पक्षियों में मानव के इस पुराने साथी को आज कहीं न पाकर मुझमें अधूरेपन का एक विचित्र सा एहसास जाग गया है। किन्तु मेरी चिन्ता का कारण यह नहीं है कि आज मैं अपने आसपास उस पक्षी को नहीं पा रहा हूँ। जो हमारी भारतीय संस्कृति एवं साहित्य का विषय रहा है। इस पक्षी को लेकर कवियों ने कितने ही गीत, कितने ही दोहे, कितनी ही कविताएँ लिखी हैं।

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मांस।
दो नैना मत खाइयो, इन्हें पिया मिलन की आस।।

मेरी चिन्ता का कारण यह भी नहीं है कि कागा हजारों वर्षों तक हमारे विश्वास और मान्यताओं के आधार पर संदेशवाहक रहा है। हम मानते रहे हैं कि जब मुंडेर पर कागा बोलता है तो वह घर में अतिथि के आने की पूर्व सूचना होती है। मेरी चिन्ता का कारण यह नहीं है कि कागा नहीं रहेगा तो अब कोई पक्षी किसी अतिथि के आने की सूचना लेकर भी नहीं आयेगा। मैं एक मनुष्य के नाते कम से कम इतना विकास तो कर ही चुका हूँ कि पलक झपकते ही समस्त आवश्यक सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकूँ। मुझे अब सूचना पाने या देने के लिए अब किसी कबूतर या कौए की आवश्यकता नहीं रही है। तब कौओं के गायब होते जाने की बात से मुझे चिन्ता क्यों? रिपोर्ट कहती है:-

'पर्यावरण सन्तुलन को ध्यान में रखते हुए अगर हम सोचें तो पक्षियों का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। आकाश में उड़ते हुए ये पक्षी वातावरण की सफाई का बहुत बड़ा प्राकृतिक साधन हैं। गिद्ध, चीलें, कौए और इनके अतिरिक्त कई पशु-पक्षी भी, हमारे लिए प्रकृति की ऐसी देन हैं, जो उन समस्त कीटों, जीवों तथा प्रदूषण फैलाने वाली वस्तुओं का सफाया करते रहते हैं, जो धरती पर मानव- जीवन के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे पशु-पक्षियों का न रहना या लुप्त हो जाना मनुष्य के लिए सबसे बड़ी हानि है।

गिद्ध, चीलें, बाज और कौए तथा अन्य अनेक प्रजातियों के ये पक्षी प्रकृति का सन्तुलन बनाए रखने के लिए अपना असाधारण योगदान बनाए रखते हैं। इन पक्षियों का मानव-जीवन के लिए जो महत्व है, उसका अनुमान हम अभी ठीक-ठीक नहीं लगा पा रहे हैं, किन्तु यदि स्थिति यही

बनी रही तो आगे चलकर हम महसूस करेंगे कि पशु- पक्षियों के छिन जाने से हम कितने बड़े घाटे में आ गए हैं।

कौन नहीं जानता कि चीलें और गिद्ध मृत पशु-पक्षियों को अपना आहार बनाकर वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने का

thearyasamaj.org

कर्तव्य पूरा करते हैं। गिद्ध और चीलें ही नहीं, कौए भी पक्षियों की उसी श्रेणी में आते हैं, जिन्हें प्रकृति ने मनुष्य के लिए स्वच्छकार बनाकर भेजा है। ये पक्षी कूड़े करकट के ढेरों में पड़ी गलने सड़ने वाली वस्तुओं को खाकर समाप्त करते रहते हैं।

हमारी चिन्ता का विषय यह है कि जब इन पक्षियों का कोई शिकार नहीं कर रहा है, कोई इन्हें मार नहीं रहा है, सता नहीं रहा है ,तब क्या कारण है कि ये हमारी बस्तियों और शहरों से विदा होते जा रहे हैं, लुप्त या समाप्त होते जा रहे हैं?

पक्षियों की संख्या में जिस तेजी के साथ कमी आ रही है, उसका कारण हमें जानना चाहिए। आदमी ने जिस ढंग से कीटनाशक विषैली औषधियों का प्रयोग किया है, वह इन पक्षियों के लुप्त हो जाने का सबसे बड़ा कारण है। वैज्ञानिक मानते हैं कि पशु-पक्षी अपनी प्राकृतिक बुद्धि के माध्यम से कीटनाशक दवाओं के प्रभाव को भली प्रकार भाँप लेते हैं और उन स्थानों से पलायन कर जाते हैं जहाँ इनका अन्धाधुन्ध प्रयोग होता है, किन्तु जब वे किसी अन्य स्थान पर जाकर भी वैसा ही प्रदूषण पाते हैं तो इस विष के कारण उनकी प्रजातियाँ धीरे-धीरे लुप्त होने लगती हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसे समस्त पशु-पक्षी, जो मृत पशु-पक्षियों का मांस खाकर अपना पेट भरते हैं, इसलिए दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं कि जिस मांस को वे खाते

हैं, वह स्वयं अत्यधिक विषैला हो चुका होता है। यह स्थति और भी अधिक गंभीर है। क्योंकि हम अपने पालतू पशुओं को जो चारा दे रहे हैं उस पर रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं का पहले ही खुला प्रयोग हो चुका होता है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशक औषधियों का विषैला प्रभाव चारे में बना रहता है और उसका हमें अनुमान तक नहीं होता।

परिणाम यह होता है कि हमारा पशुधन धीरे-धीरे असर करने वाले विष का सेवन करता रहता है जिससे वह स्वयं तो समय से पहले काल का ग्रास बनता ही है, साथ ही उन पशु-पक्षियों को भी ले बैठता है, जो उनके मांस का सेवन करते हैं और प्रतिरोधक शक्ति अन्य जीवों की अपेक्षा कम होने के कारण शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। यही कारण है कि अब विकसित देशों में बहुत सी कीटनाशक औषधियों तथा कुछ विशेष रासायनिक खादों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि पर्यावरण में विष के निरन्तर बढ़ते रहने से पक्षियों की प्रजनन-क्षमता का ह्रास हुआ है। प्रजनन क्षमता कम हो जाने के कारण भी पक्षियों की बहुत सी प्रजातियाँ लुप्त होती जा रही हैं। वास्तविकता यह है कि आज वातावरण में जिस ओर भी देखें विष ही विष घुला पड़ा है। गाँवों, बस्तियों और नगरों, महानगरों से लेकर जंगलों और पर्वतों तक में विस्फोटक पदार्थों का जिस बेतहाशा ढंग से खुला प्रयोग हो रहा है, उसे विस्तार में जाकर समझने की आवश्यकता नहीं है। डीजल और पेट्रोल जैसे ईंधन की बढ़ती हुई खपत और उसके फलस्वरूप फैलते वातावरण में घुलते हुए धुएँ ने धरती पर जीवन को कितना दुष्कर बना दिया है, यह कोई ढकी छुपी बात नहीं है। ऐसी प्रदूषित हवा, ऐसे प्रदूषित जल, ऐसे प्रदूषित आहार का सेवन करने वाले पशु-पक्षी, जो मानव जाति से अधिक संवेदनशील हैं, यदि इस विष को सहन न करते हुए लुप्त होते जा रहे हैं तो इसमें आश्चर्य की बात नहीं है।

इन मांस-भक्षी पक्षियों के लुप्त हो जाने के उपरान्त जब कोई ऐसा प्राकृतिक साधन हमारे पास नहीं रहेगा, जिससे हम अपने मृत पशुओं को गलने सड़ने से बचाकर ठिकाने लगा सकें तो उस समय क्या होगा? गिद्ध, चीलें और कौए आदि मांस भक्षी पंछी तो हमारी धरती से विदा हो चुके होंगे, इनके दुर्गंध फैलाने वाले हाड-मांस के प्रदूषण से हमें बचाने वाला तो कोई होगा नहीं, तब स्पष्ट है कि स्वच्छ हवा में यह प्रदूषण फैलेगा।

ध्यान देने की बात यह है कि वातावरण में जो विष फैला है, जो प्रदूषण व्याप्त है, उसका उत्तरदायित्व भी हम मनुष्यों पर ही है। विकास की अंधी दौड़ में हम यह भूल गए कि मूर्ख आदमी जिस शाखा पर बैठा है, उसी को काटता भी जा रहा है। उदाहरण के लिए पेट्रोलियम पदार्थों का प्रयोग आरम्भ करते हुए कब किसने यह सोचा था कि इसके कसैले धुंए से वातावरण प्रदूषित होगा अथवा **भाँति-भाँति के रासायनिक खादों तथा कीटनाशक औषधियों से अपनी उपज को बढ़ाने एवं सुरक्षित रखने की लालसा में कब किसे यह ख्याल आया होगा कि इसका विषैला प्रभाव हम पर नहीं उन पशु-पक्षियों**

thearyasamaj.org

के जीवन पर भी पड़ेगा जो धरती पर मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं।

गिद्ध और चीलें लुप्त प्रायः हो चुके हैं। कौए गायब हो रहे हैं यह बात साधारण नहीं है। यह इस खतरे का द्योतक है कि यदि यह सिलसिला चलता रहा तो धरती आदमी के अनुकूल नहीं रहेगी। **पर्यावरण का सन्तुलन बिगड़ेगा तो धरती पर मनुष्य का जीवन खतरे में पड़ जायेगा।**

सारांश यह है कि पशु-पक्षियों के लिए ही नहीं स्वयं अपने लिए भी हमने इस धरती को रहने योग्य नहीं छोड़ा है। चील गिद्ध और कौए जो धरती के प्रदूषित माहौल से बचकर आकाश के स्वच्छ माहौल में सांस लेने को उड़ान भर लिया करते थे, अब वह भी उनके लिए अनुकूल नहीं रहा है। आकाश को भी मनुष्य ने कचरे और प्रदूषण से बुरी तरह भर दिया है, अगर हम नहीं चेते तो नतीजे आने वाली पीढ़ियों को भी भुगतने पड़ेंगे।

गिरिराजशरण अग्रवाल
१६, साहित्य विहार, बिजनौर, उत्तरप्रदेश
(साभार- गर्भनाल)

❑❑❑

स्वास्थ्य

ये सात लक्षण हो सकते हैं थाइरॉइड के संकेत

ज्यादा काम भी नहीं किया और थकान महसूस हो रही हो या खान-पान पर ध्यान देते हैं फिर भी वजन तेजी से बढता ही जा रहा हो। शरीर में ऐसे कई बदलाव होते हैं जिनको हम पहले तो हल्के में लेते हैं और बाद में यह हमारे लिए किसी गंभीर रोग का संकेत निकलते हैं, थाइरॉइड की समस्या भी कुछ ऐसी ही है।

अक्सर थाइरॉइड के लक्षणों को हम शुरूआती दौर में भाँप ही नहीं पाते हैं और बाद में इसके लक्षणों की अनदेखी हमें हाइपोथाइरॉइड या हाइपरथाइरॉइड की स्थिति तक पहुँचा देती है। थाइरॉइड हमारे शरीर में मौजूद ऐसी ग्रन्थि है जो मेटाबॉलिज्म में मदद करती है। इसमें मौजूद हार्मोन टी ३, टी ४ और टीएसएच का स्तर कम या ज्यादा होने की समस्या होती है। अगर आप इन सातों लक्षणों को महसूस कर रहे हैं तो हो सकता है ये आपके लिए थाइरॉइड की समस्या का संकेत हों।

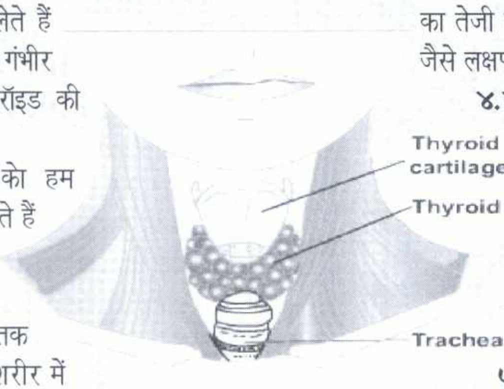

Normal Thyroid

१. मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द

हाइपोथाइरॉइड यानी शरीर में टीएसएच अधिक और टी३, टी ४ कम होने पर मांसपेशियों में और जोड़ों में अक्सर दर्द रहता है।

२. गर्दन में सूजन

थाइरॉइड बढ़ने पर गर्दन में सूजन की संभावना बढ़ जाती है। गर्दन में सूजन या भारीपन का एहसास हो तो तुरन्त डॉक्टर को दिखाएँ।

३. बालों और त्वचा की समस्या

खासतौर पर हाइपोथायरॉइड की स्थिति में त्वचा में रूखापन, बालों का झड़ना, भौहों के बालों का झड़ना जैसी समस्याएँ होती हैं जबकि हाइपरथाइरॉइड में बालों का तेजी से झड़ना और संवेदनशील त्वचा जैसे लक्षण दिखते हैं।

४. पेट खराब होना

लम्बे समय तक कब्ज या कान्सटिपेशन की समस्या हाइपोथाइरॉइड में होती है जबकि हाइपरथाइरॉइड में दस्त या डायरिया की दिक्कत बार बार होती है।

५. हार्मोनल बदलाव

महिलाओं को पीरियड्स के दौरान थाइरॉइड की स्थिति में पेट में दर्द अधिक रहता है वहीं हाइपरथाइरॉइड में अनियमित पीरियड्स रहते हैं। थायरॉइड की स्थिति में गर्भधारण करने में भी दिक्कत हो सकती है।

६. मोटापा

हाइपोथाइरॉइड की स्थिति में तेजी से वजन बढ़ता है। इतना ही नहीं शरीर में कॉलेस्ट्रॉल का स्तर भी बढ़ जाता है। वहीं हापरथाइरॉइड में कॉलेस्ट्रॉल बहुत कम हो जाता है।

७. थकान, अवसाद या घबराहट

अगर बिना अधिक मेहनत करने के बाद भी आप थकान महसूस करते हैं या छोटी छोटी बातों पर घबराहट होती है तो इसकी वजहर थॉयराइड हो सकती है।

साभार- डॉ. स्मिता चन्द्रा (एम.डी.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ, वाराणसी

❑❑❑

thearyasamaj.org

वेदार्थ रक्षण में कल्पसाहित्य का योगदान

-डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती

कल्प शब्द का विशिष्टार्थ-

कल्प्यते समर्थ्यते इति कल्पः। कल्प शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थमात्र समर्थन कल्पना या समुद्भावना है किन्तु यह शब्द आगे चलकर वेदविहित कर्म या यज्ञ के पर्यायवाची के रूप में और तत्प्रतिपादक शास्त्रों में कैसे प्रतिष्ठित हो गया इस विषय में वैदिक वाङ्मय के पारदृश्वा मनीषियों का कथन है कि वेदों में विशेषरूप से अथर्ववेद तथा यजुर्वेद में राजसूय, अग्निष्टोम, अश्वमेध, अग्न्याधेय षोडशी आदि श्रौत यागों, त्रिविध अग्नियों, सोम आसन्दी वेदी यूपादि यज्ञिय पदार्थों, प्रयाज अनुयाज वषट्कार आश्रावण प्रत्याश्रावण आदि यज्ञिय क्रियाओं तथा-

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन।।

जैसे यज्ञ याग सम्बन्धी स्पष्ट संकेतों के आधार पर साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध तथा सहस्र संवत्सर साध्य सत्र पर्यन्त यज्ञों की कल्पना की। इसी कारण यज्ञों को 'कल्प' यह अन्वर्थक नाम प्राप्त हुआ और इनके प्रतिपादक ग्रन्थों को कल्पशास्त्र के नाम से जाना गया।

कल्पशास्त्र वैदिक वाङ्मय का एक वृहत्तम भाग है, यह श्रौत्रगृह्य धर्म शुल्ब सूत्रों में उपबृंहित है। साक्षात् निरतिशय परब्रह्म से प्रकट होने के कारण परमपवित्र वेदों के स्वरूप तथा अर्थ के संरक्षण के निमित्त अल्पमति मनुष्यों के लिए वेदांगों का प्रादुर्भाव हुआ। वेदांग साहित्य का जन्म उपनिषत्काल तक हो चुका था क्योंकि मुण्डकोपनिषद् में अपरा विद्या के प्रसंग में षडङ्गों का नामोल्लेख प्राप्त होता है-

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति।।

वेद के स्वरूप तथा अर्थ संरक्षण में सभी वेदांगों का अपना-अपना महत्व है। यहाँ कल्पसाहित्य के योगदान के विषय में ही किञ्चित विवेचन किया जा रहा है।

कल्पों का आविर्भाव तथा महत्त्व कल्प साहित्य का आविर्भाव ब्राह्मण ग्रन्थों में विस्तीर्ण यज्ञ याग की प्रक्रिया को संक्षिप्त तथा व्यवस्थित करने के लिए हुआ, ऐसा माना जाता है। **'कल्पो वेदविहितानां कर्मणाम् आनुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्।' कल्पग्रन्थ वेदरूपी पुरुष के हस्ततुल्य है। जिस प्रकार हाथों से कोई भी वस्तु पकड़ी जाती है और रक्षित भी की जाती है। उसी प्रकार कल्पशास्त्र द्वारा वेदों का याज्ञिक अर्थ सम्पूर्णता से जाना जाता है और रक्षित भी किया जाता है।** हस्तविहीन पुरुष क्रियाशून्य होने से महत्वहीन हो जाता है। वेद भी कल्प रहित अर्थात् विनियोग रहित होने पर महत्वहीन हो जाते हैं। विनियोगों से मंत्र और मन्त्रार्थ दोनों ही सुरक्षित रहते हैं। इस प्रकार जिन यज्ञ-यागादि तथा विवाह, उपनयन आदि कर्मों का विशिष्ट प्रतिपादन वेद अथवा ब्राह्मण ग्रन्थों में किया जाता है उन्हीं का क्रमबद्ध निरूपक शास्त्र कल्पशास्त्र है। कल्पशास्त्र के बिना मनुष्यों के लौकिक वैदिक कर्मकाण्ड गतिहीन हैं, पंगु हैं। कल्पों की कर्मकाण्ड में दक्षता देखकर ही भट्ट कुमारिल ने अर्थवाद रूप में कहा-

वेदादृतेऽपि कुर्वन्ति कल्पैः कर्माणियाज्ञिकाः।
न तु कल्पैर्विना केचिन्मन्त्रब्राह्मणमात्रकात्।

कल्प और वेदार्थ- वेद तथा वेदार्थ रक्षण में कल्प शास्त्रों की उपयोगिता निस्सन्दिग्ध है। जब यज्ञों में 'इषेत्वा' मंत्र बोलकर पलाश शाखा को काटा जायेगा, 'ऊर्जे त्वा' बोलकर शाखा को सन्नमित किया जायेगा अथवा उसकी धूलि आदि का अपनयन किया जायेगा ' हविष्कृदेहि' बोलकर यजमान को हवि बनाने के लिए बुलाया जाएगा तथा **'भृगूणाम्- अङ्गिरसां- तपसा तप्यध्वम्'** कहते-कहते कपालों को भस्म से आच्छादित किया जायेगा तब तत्तत् वेदमंत्रों की रक्षा तो होगी ही, यज्ञपरक वेदार्थ भी शब्दार्थ सम्बन्ध से स्वतः रक्षित हो जायेगा। वेदार्थ रक्षण में कल्पशास्त्र की उपयोगिता महर्षि यास्क के अनुसार इस प्रकार समझनी चाहिए कि मंत्रों के त्रिविध अर्थ होते हैं। प्रथम- **आधियाज्ञिक** अर्थ यज्ञयाग परक, द्वितीय- **आधिदैविक** अर्थ भूगोल खगोल सम्बन्धी होने से विज्ञान परक और तृतीय-**आध्यात्मिक** अर्थ शरीर आत्मा-परमात्मा भेद से त्रिविध होता है।

ये तीनों ही अर्थ अपनी-अपनी दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान

thearyasamaj.org

रखते हैं, पुनरपि महर्षि यास्क ने इनको उत्-उत्तर-उत्तम तीन श्रेणियों में विभक्त किया है।

उनकी दृष्टि में मंत्रों का प्रथम अर्थ है याज्ञिक जो कि आधिदैवत और अध्यात्म का आधारभूत है, द्वितीय कोटि में आधिदैविक अर्थ आते हैं और मंत्रार्थ की तीसरी सर्वोत्कृष्ट कोटि है आध्यात्मिक अर्थ। निरुक्तकार यास्क के सुन्दर तथा सारगर्भित शब्द इस प्रकार हैं-

'अर्थंवाच: पुष्पफलमाह। याज्ञदैवते पुष्पफले देवताध्यात्मे वा' यहाँ फूल और फल की कल्पना कर बड़ी सहजता से समझाया गया कि समस्त याज्ञिक प्रक्रिया पुष्प तुल्य है और इस पुष्प का फल है आधिदैविक अर्थ और आधिदैविक तथा आध्यात्मिक अर्थों की तुलना में आधिदैविकार्थ पुष्प स्थानीय हैं और अध्यात्म फल स्थानीय है।

इस विवेचन के आधार पर मंत्रों के याज्ञिक अर्थ किसी न किसी आधिदैविक रहस्य की ओर संकेत करते हैं यह सिद्ध होता है। 'उदाहरणार्थ- यज्ञ यागों के अवसर पर विधीयमान अग्निचयन प्रक्रिया सलिलमयी भूमि की नौ अवस्थाओं का निरूपण करती है, दशपौर्णमास याग की ३० (तीस) आहुतियाँ तीस दिन वाले मास का संकेत करती हैं और अश्वमेध याग का विशिष्ट अश्व, अश्व रशना का परिमाण, चार पत्नियाँ, प्रत्येक की सौ-सौ दासियाँ आदि सम्पूर्ण विधिविधान पार्थिव अश्व का संकेत न देकर द्युलोक के आदित्य का ही संकेत करता है। अश्वमेध के अश्व की स्तुति में तथा अश्वयोजन में प्रयुक्त होने वाले- **युञ्जन्ति ब्रध्नमरूषं चरन्तं परितस्थुष:। रोचन्ते रोचनादिवि** (२३/५) **हिरण्यशृंगोऽयो अस्य पादा:** (१/१६३/६) **ईर्मान्तास: सिलिक मध्यमास: सं शूरणासो दिव्यासो अत्या:** (१/१६३/१०) आदि मंत्र भी स्पष्ट ही सूर्यपरक हैं।

इन स्थलों को देखकर यजुर्वेद भाष्यकार आचार्य उव्वट को यह कहना पड़ा- **'अश्वोऽत्र आदित्यवत् स्तूयते।'**

अस्तु। एतादृश आधिदैविक रहस्यों से अभिभूत व्यक्ति अध्यात्म अर्थात् शरीर, आत्मा परमात्मा की यथार्थता को भी जानता हुआ परमात्मा के प्रति अपने को समर्पित कर देता है अर्थात् चरमलक्ष्य मोक्ष का इच्छुक बन जाता है। इस प्रकार इन तीनों प्रक्रियाओं का परस्पर सम्बन्ध है, कल्पशास्त्र केवल याज्ञिक अर्थ को सुरक्षित रखता है। याज्ञिक अर्थ के उत्कृष्ट आधिदैविक तथा आध्यात्मिक रहस्यों तक पहुँचने के लिए याज्ञिकों को अवश्य प्रयत्नशील होना चाहिए अन्यथा वेदों के साथ महान् अन्याय होगा और महर्षि यास्क निर्दिष्ट परम्परा का महान् अपमान भी।

परम्परागत याज्ञिक अर्थ की ग्राह्यता-

सम्प्रति वैदिक वाङ्मय के नाम पर जो भी साहित्य उपलब्ध हो रहा है वह दर्शपौर्णमास याग से लेकर अश्वमेध पर्यन्त विधि विज्ञान से या विवाहादि गृह्य विधानों से ओत-प्रोत है। इतना ही नहीं वेदविषयों का निर्देश या प्रतिपादन करने वाले बृहद्देवता सर्वानुक्रमणी आदि ग्रन्थ भी यज्ञयाग के अतिरिक्त किसी विषय को प्रतिपादित करते दिखाई नहीं देते। पाणिनीय व्याकरण के समस्त छान्दस उदाहरण भी प्रायः यज्ञपरक हैं। वैदिक वाङ्मय में व्याप्त यज्ञों के इस प्रभाव को देखते हुये यह तो सुतरां स्पष्ट है कि यह याज्ञिक प्रक्रिया ऋषियों द्वारा पूर्ण अनुमोदित है और चिरकाल से चली आ रही है किन्तु साथ ही यह भी विचारणीय है कि याज्ञिक प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करने वाले आचार्य सायण, उव्वट महीधर के भाष्यों को प्रमाण मानकर तद्गत विधि विज्ञान को यथावत् स्वीकार कर लिया जाये तो वेद ज्ञान प्रदाता ब्रह्म की पवित्रता, न्यायप्रियता, सर्वज्ञता संदिग्ध कोटि में आ जायेगी और महात्मा बुद्ध की भाँति सभी एक स्वर से कहने लगेंगे **'हम ऐसे वेदों को मानने को तैयार नहीं।'** दूसरी ओर यदि समस्त यज्ञ प्रक्रिया को नकार दिया जाये तो ऋषि परम्परा विघात का दोष लगेगा, ऐसी स्थिति में हमें तो वेदैकनिष्ठ ऋषि दयानन्द का ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का यह वाक्य सर्वथा उपयुक्त लगता है

'तस्माद् युक्ति सिद्धो वेदादि प्रमाणानुकूलो मन्त्रार्थानु सृतस्तदुक्तोऽपि विनियोगो ग्रहीतुं योग्योऽस्ति।''

ऐतरेय, शतपथ ब्राह्मण, पूर्वमीमांसा, श्रौतसूत्रादि में कहे गये विनियोगों को स्वीकृति प्रदान करते हुये भी महर्षि यह कहना नहीं भूलते कि युक्तिसिद्ध, वेदादि प्रमाणों के अनुकूल और मंत्रार्थ का अनुसरण करने वाला विनियोग ही सर्वदा ग्राह्य है। इस कथन से ऋषि ने अनेक समस्याओं का एक साथ समाधान कर दिया है। पौराणिक विद्वान् ऋषि के इस कथन पर मर्माहत हो उठे। आगरा के पं. घनश्याम दास जी इस कथन के विरोध में अपनी पुस्तक भूमिकाधिक्कार में लिखते हैं- 'दयानन्द ने शतपथादि के अनुसार भाष्य करने की प्रतिज्ञा तो की परन्तु निभा न सके।' इस विषय में सम्प्रति विस्तारभय से मेरा तो इतना ही कहना है कि पण्डित जी पहले महर्षि की आन्तरिक पीड़ा को समझें तभी कुछ टीका

thearyasamaj.org

टिप्पणी करें तो समीचीन होगा। अस्तु।

कल्पसूत्रों की सर्वजनग्राह्यता-

कल्पसूत्रों को वेदार्थ का उपबृंहक तथा संरक्षक मानते हुये भी मेरी दृष्टि में उनकी सर्वजनग्राह्यता बनाने के लिए कतिपय निर्णय अवश्य लेने होंगे-

१. यज्ञों में विधीयमान पशुहिंसा अतिप्राचीन ऋषियों को मान्य नहीं थी, ये स्थल या तो प्रक्षित माने जायें या वेद विद्या के वैखानस पं. मीमांसक जी के अनुसार सृष्टि में चल रही आसुरी क्रियाओं के दिग्दर्शक मात्र माने जायें। इन दृश्यों को यज्ञस्थल पर क्रियान्वयन करना आवश्यक नहीं। इसके अतिरिक्त जिन स्थलों को अपने बुद्धिवैभव से हिंसारहित किया जा सकता है उन्हें अवश्य करना चाहिए। तद्यथा- गृह्यसूत्रों का अष्टकाप्रकरण। आग्रहायणी के बाद तीन अष्टकाओं के विधान हेतु सूत्र प्राप्त होता है-

अपूपमांसशाकैर्यथासंख्यम्

पहली अष्टका मालपुये से, दूसरी मांस से, तीसरी शाक से। मध्यम अष्टका हेतु सूत्र बनाया गया- **मध्यमा गवा**। बस इस सूत्र के बनते ही सूत्रकार व्याख्या करने लगे यह गोमांस से की जाती है। जरा विचार करें जिस देश में सिंह से गाय की रक्षा हेतु राजा दिलीप ने अपने प्राणों को तुच्छ समझते हुए कहा हो-

सेयं स्वदेहार्पण निष्क्रयेण न्याय्या मया मोचयितुं भक्त:।
न पारणा स्याद् विहतास्तवैवं भवेदलुप्तश्च मुनेः क्रियार्थ:।।

वहाँ किसी भी प्रसंग में गाय मारने का विधान है यह कैसे स्वीकार किया जा सकता है। यहाँ वेदार्षवेत्ता महर्षि यास्क के- 'ताद्धितेन कृत्स्नवन्निगमा भवन्ति' कथन का अनुसरण करते हुए 'गोः पयसा क्षीरेण वा मध्यमा अष्टका कर्त्तव्या' यह भी किया जा सकता है अर्थात् गाय के दूध से, खीर से मध्यम अष्टका की जाये। प्रकरण गत वपा, मांस ऊवध्य आदि शब्दों के दूसरे भीअर्थ यौगिक प्रक्रिया से सम्भव हैं। इसी प्रकार गृह्यसूत्रों में आये- 'अवकीर्णि प्रायश्चित्त' में गर्दभ का मारण, शूलगव, वृषोत्सर्ग आदि प्रकरणों को भी हिंसारहित सिद्ध किया जा सकता है। हर्ष की बात है कि आर्य जगत् के विद्वानों द्वारा कतिपय गृह्यसूत्रों के हिंसारहित भाष्य किये भी जा चुके हैं।

२. कल्पसूत्र वेदांगों की रक्षा के लिए बनाये गये यह सत्य है किन्तु बहुत से स्थलों पर ये वेद पर भारी होते हुये दिखाई देते हैं। जिससे यह प्रतीत होता है कि वेदों के लिए कल्पसूत्र नहीं बनाये गये बल्कि इनके विनियोगों के लिए वेदों की रचना की गई जबकि सत्य यह है कि वेद पहले बने, कल्पशास्त्र बाद में बने। इनका रक्षा परक स्वरूप तभी अक्षुण्ण रहेगा जब यहाँ मनमाने विनियोग न हों, अवैदिक बाते न हों।

३. तृतीय निर्णय यह लिया जाये कि कर्मकाण्ड में मंत्रों का विनियोग मंत्रार्थ के अनुकूल ही होना चाहिए "यत्कर्म क्रियमाणं ऋग्यजुर्वाऽभिवदति"। विनियोग गलत होने से भी मंत्रार्थ की रक्षा नहीं हो सकती किन्तु खेद की बात है कि उत्तरकाल में जबकि देश में यज्ञों का मान तथा प्रभाव बढ़ा और प्रत्येक कामना के लिए यज्ञों की कल्पना की गई तब उन समस्त क्रियाओं के अनुरूप वेदमंत्र उपलब्ध न होने पर मंत्रार्थ की उपेक्षा करके याज्ञिक क्रियाओं के साथ उनका सम्बन्ध जोड़ा गया तद्यथा ऐन्द्री ऋचा से गार्हपत्याग्नि का उपस्थान (ऐन्द्रया गार्हपत्यमुपतिष्ठते) और दधिक्राव्णो अकारिषम्- मंत्र बोलकर दधिभक्षण की बात कही गई। ये विनियोग किन्हीं छोटे-मोटे ग्रन्थों के नहीं बल्कि पूर्ण मान्यता प्राप्त मैत्रायणी संहिता और शांखायन सूत्र के हैं।

क्रियाओं हेतु मंत्र उपलब्ध न होने पर अक्षर मात्र के साक्ष्य से भी विनियोग किये गये तद्यथा- शन्नो देवी रभिष्टये- मंत्र से शनैश्चर पूजा, उद्बुध्यस्वाग्ने- मंत्र से बुध ग्रह की पूजा का विधान प्राप्त होता है। ग्रह्यसूत्रों में उष्ट्रारोहण, हस्त्यारोहण, गर्दभारोहण हेतु नये-नये मंत्र कल्पित किये गये, प्रभु से कुशलता की प्रार्थना न कर ऊँट हाथी आदि से प्रार्थना की गई कि आप मुझे कुशलपूर्वक गन्तव्य तक पहुँचाइयेगा। साथ ही बिजली कड़कने पर 'शिवा नो वर्षाः सन्तु' मंत्र की कल्पना शृंगाली गीदड़ी के चिल्लाने पर 'शिवो नामासि स्वाधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा-मा हिंसीः' याजुष मंत्र का विनियोग बोलते हुये शकुनि से प्रार्थना, ग्राम सीमा में लगे आम, पीपल आदि वृक्षों से प्रार्थना कहाँ तक उचित है? मेरी दृष्टि में ऐसे-ऐसे विनियोगों से वेद या वेदार्थ की रक्षा संभव नहीं। ऐसे विनियोग वेदों को उपहासास्पद ही सिद्ध करेंगे। ये ही सब कारण रहे जिनसे मंत्रानर्थक्यवाद प्रचलित हुआ और उसका निराकरण करने हेतु कभी आचार्य यास्क को और कभी महर्षि जैमिनि को अपने शिष्यों सहित शास्त्र समर में भाग लेना पड़ा। अब भी सतत् प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है।

गुरुकुल- आर्षकन्या विद्यापीठ
नजीबाबाद, जिला- बिजनौर

□□□

thearyasamaj.org

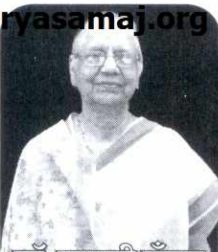

गीता का कर्म सन्देश

डॉ. गायत्री पँवार

गीता भारतीय जीवन-दर्शन और हमारे लोक व्यवहार को सरल भाषा में व्यक्त करने वाला अद्भुत ग्रन्थ है। महाभारत युद्ध के आरम्भ में कौरव-पाण्डवों भीष्म पितामह आदि को विपक्ष में देखकर अर्जुन युद्ध के प्रति सर्वथा हतोत्साहित हो जाता है एवं शस्त्र त्याग देता है। तब श्रीकृष्ण ने उसे वीर क्षत्रिय के रूप में उसके कर्त्तव्यों का बोध कराने के लिये गीता का उपदेश दिया, जिसका महत्व सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक है। कर्त्तव्य, धर्म तथा ईश्वर-प्राप्ति को जिस सरलता से गीता में दर्शाया गया है, वह

अत्यन्त दुर्लभ है। गीता का मूल स्रोत उपनिषद् माने गये हैं-

सर्वोपनिषद् गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।

सारी उपनिषदें गायें हैं जिनके अमृतमय सारतत्व का दोहन करके उनके मर्म को श्रीकृष्ण ने गीता में अभिव्यक्त किया है। उपनिषद् आध्यात्मिक ग्रन्थ हैं। इनमें हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों के अध्ययन, गहन चिन्तन, ध्यान, तप, तत्त्वज्ञान एवं आत्मानुभूति की सुन्दर, सरल और गहन अभिव्यक्ति है। उपनिषद् में जीवन-पथ के प्रेयमार्ग और श्रेयमार्ग इन दो मार्गों का वर्णन है। प्रेयमार्ग हमारे सामान्य सांसारिक जीवन का मार्ग है तथा श्रेय मार्ग आत्म-कल्याण के लिये तप, त्याग एवं वैराग्य का कठिन पथ है। यह पथ तीक्ष्ण धार वाले छुरे की धार पर चलने के समान दुर्गम है।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति। - कठोपनिषद्

ऐसे कठिन मार्ग को गीता में निष्काम कर्मयोग के द्वारा सर्वजनसुलभ बना दिया गया है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को युद्ध के लिये प्रेरित करते हुये अपने उपदेश के आरम्भ में (गीता के अध्याय द्वितीय में) आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म का प्रतिपादन करते हैं। सबके शरीरों में नित्य आत्मा का निवास है। यह आत्मा अजर अमर है। शस्त्र, अग्नि या कोई भी शक्ति आत्मा का नाश नहीं करती। केवल शरीर मरता है आत्मा नहीं।

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।

जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है एवं मरने वाले का पुनर्जन्म होता है। आत्मा की अमरता की स्पष्ट मीमांसा करने के पश्चात् जीवन में कर्म की महत्ता को समझाया है। अनासक्त भाव से सफलता एवं असफलता में विचलित हुए बिना अपने कर्त्तव्य कर्म को पूर्ण निष्ठा से करने का उपदेश दिया है।

कर्म की अनिवार्यता तथा आसक्ति विहीन कर्म करते हुए जीने का सूत्र ईशावास्योपनिषद् के द्वितीय मंत्र में है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ँसमाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

इस संसार में अपने कर्त्तव्य कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार से कर्म तुझ मनुष्य में लिप्त नहीं होंगे।

गीता में श्रीकृष्ण ने इस संक्षिप्त सूत्र को अति विस्तार के साथ सरलता से समझाया है। कर्म करना मनुष्य का स्वभाव है, उसकी प्रकृति है-

न ही कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत।। - गीता

कोई भी मनुष्य किसी भी अवस्था में क्षणमात्र भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता। शरीर की चेष्टाओं से नहीं तो वह मन के विचारों से कर्म में प्रवृत्त रहता है। इस कर्म से ही मनुष्य अधोगति को प्राप्त हो सकता है और कर्म के द्वारा ही सद्गति तथा मानव जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है। कर्म के साथ हमारे मानसिक भाव हमारा चिन्तन और संकल्प कर्म को प्रेयमार्ग अथवा श्रेय मार्ग (आत्म कल्याण के मार्ग-मोक्ष मार्ग) की ओर ले जाते हैं।

गीता कहती है हमारा कर्म पर ही अधिकार है। हमारे पास बुद्धि और हाथ हैं। इनसे हम अपनी सम्पूर्ण निष्ठा, योग्यता एवं कुशलता से कर्म करें। परिणाम की अपेक्षा नहीं करें। यह कर्म हमें आत्मा-परमात्मा के योग की सिद्धि की ओर ले जाता है, श्रेय-मार्ग हमारे आत्म-कल्याण के मार्ग पर ले जाता है।

thearyasamaj.org

(योगः कर्मसु कौशलम् -गीता)

योग-सिद्धि के लिये वन या पहाड़ों पर जाकर कठोर तप किये बिना ही अपने सामान्य जीवन में अपने कर्मों की शुद्धि से अपने भावों की निर्मलता से योगी बन सकते हैं। गीता कहती है-

ज्ञेयः स नित्य संन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति।

संन्यासी, तपस्वी या साधु महात्मा वह है जो न किसी से द्वेष करता है और ना ही किसी से कुछ प्राप्त करने की अपेक्षा रखता है। यह साधना सामान्य गृहस्थ जीवन में भी की जा सकती है। मार्ग बहुत सरल भी नहीं है। क्योंकि राग-द्वेष हमारे स्वभाव में हैं। यदि हम किसी के लिये कुछ करते हैं तो उससे कुछ पाने की अपेक्षा भी रखते हैं। यदि हमे प्रतिदान नहीं मिलता तो हम दुःखी होते हैं, मन में बुरे विचार आते हैं- कैसा कृतघ्न है यह व्यक्ति आदि। लेकिन यदि इन विचारों को न आने दें तो हम आनन्द मार्ग के, योगमार्ग के पथिक बन सकते हैं। जैसे मार्ग में किसी अन्धे को सहारा देकर तीव्रगामी यातायात के बीच से सड़क पार करवाकर हम सहज भाव से बिना किसी अपेक्षा के चल देते हैं अथवा बस में स्वयं खड़े होकर किसी वृद्ध या अशक्त को बिठाते हैं तो मन में आह्लाद की अनुभूति होती है। इसी भाव से बिना किसी अपेक्षा से कार्य करने की प्रेरणा गीता ने दी है। इसी का हम अभ्यास करें, निरन्तर प्रयास करें यही गीता का सन्देश है-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

कर्मफल के प्रति अनासक्त तथा दुःख-सुख, हानि-लाभ आदि विषमताओं में समभाव रखने वाले को गीता में स्थितप्रज्ञ कहा है।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।।

यह स्थितप्रज्ञ भारतीय दर्शन के अनुसार जीवन्मुक्त है। गीता ने ईश्वर की आराधना अपने कर्त्तव्य-कर्म से करने का अभिनव सन्देश दिया है-

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दती मानवः।।

जिस परमात्मा से सारा संसार चलायमान है। जो इस सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है। इस परमात्मा की अपने कर्त्तव्य कर्म द्वारा पूजा-अर्चना करके अर्थात् अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा से पालन करके मनुष्य परम सिद्धि-आत्मकल्याण को प्राप्त कर सकता है। हम देशवासी सिद्धियों को प्राप्त करने के लिये गुरु करते हैं। मंदिरों में हजारों रुपयों के चढ़ावे चढ़ाते हैं, देव प्रतिमाओं का दुग्ध, चन्दन, केसर आदि से अभिषेक करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों के आधार पर इन सबका आजीवन घोर विरोध किया। गीता में भी उपर्युक्त श्लोक में परमात्मा की आराधना का सरल स्वाभाविक मार्ग निर्दिष्ट किया गया है।

वर्तमान समय में देश में भ्रष्टाचार और अनाचार बढ़ रहे हैं। १५ अगस्त स्वाधीनता दिवस पर हमारे माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द मोदी जी ने देशवासियों का आह्वान किया कि वे अपने बालकों को अनुशासन में रखें। हमें भ्रष्ट आचरण, रिश्वतखोरी व भेदभाव आदि से मुक्त होकर राष्ट्रीय चरित्र को निखारना है। हम अन्ध विश्वासों से मुक्त होकर देश की समस्याओं पर विचार करें और अपनी कर्मभूमि पर आगे बढ़े। हमारा कर्त्तव्य है कि हम देश से गरीबी और अनाचार को मिटायें। गरीबों की तथा अशक्त जनों की हम यथाशक्ति सहायता करें। किसानों को प्रश्रय दें जिससे वे आत्मदाह अथवा अपनी जमीन बेचने के लिये विवश न हों। देशहित एवं मानव-कल्याण के लिये बिना किसी लोभ या आसक्ति के कार्य करते रहें। हम जिस क्षेत्र में हों- चाहे मजदूर, किसान, सैनिक, शिक्षक, अभियन्ता, उद्योगपति या नेता-हमारा लक्ष्य अपने कार्य को पूर्ण कुशलता से करते हुए देश को आतंकियों से सुरक्षित एवं समृद्ध बनाना है। दुःख एवं दरिद्रता को दूर करके सबके सुख और ऐश्वर्य के लिए निरन्तर कार्य करना है। **यही गीता का कर्म-सन्देश है।**

पूर्व विभागाध्यक्ष-संस्कृत
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

❑❑❑

उदयपुर क्षेत्र की अत्यन्त लोकप्रिय नेत्री, सरल, सौम्य व्यक्तित्व की धनी तथा कर्मठता की प्रतीक वर्तमान में राजसमन्द से विधायक, भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, स्वच्छ राजनीति की पहचान, न्यास के शुभ कार्यों में सदैव सहयोगी माननीया किरण माहेश्वरी जी को केबिनेट मन्त्री (पी.एच.ई.डी.) बनाए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष

thearyasamaj.org

आनन्द के क्षण

महाशय धर्मपाल जी को भारत गौरव सम्मान

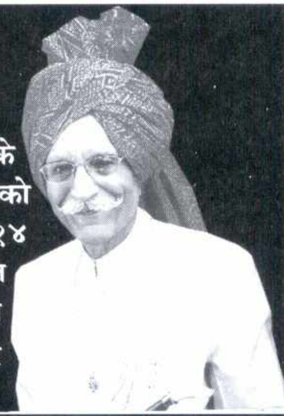

समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए, वर्तमान समय के भामाशाह, एम.डी.एच. दिल्ली के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी को दिनांकः १६ सितम्बर २०१४ को दिल्ली में भारत गौरव पुरस्कार- २०१४ से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध अभिनेता रजा मुराज सहित आर्यजगत् तथा एम.डी.एच. परिवार के सदस्यगण आह्लादित मन से उपस्थित थे। न्यास अध्यक्ष महाशय जी को न्यास परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्रीमती ब्रजलता आर्या की पुण्य स्मृति में

श्री सुरेश चन्द्र जी अग्रवाल का स्तुत्य औदार्य

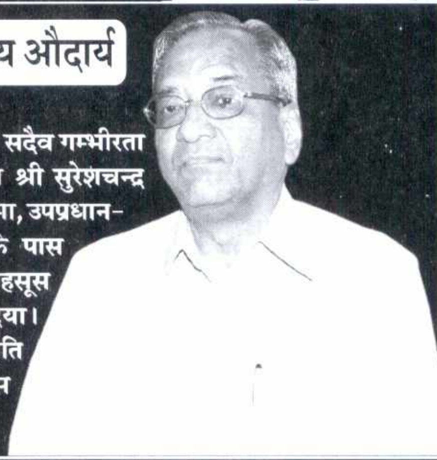

न्यास की सभी दुविधाओं व कठिनाईयों को समझ सदैव गम्भीरता पूर्वक उनके निवारण का गहन प्रयत्न करने वाले श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल (अध्यक्ष गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, उपप्रधान- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने न्यास के पास प्रचार-प्रसार हेतु एक वेद प्रचार वाहन की कमी को महसूस किया तथा स्वयं आगे बढ़कर इस कमी को दूर करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। आज इस वाहन को श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल की धर्मपरायणा पत्नी की स्मृति को समर्पित करते हुए न्यास परिवार गौरव की अनुभूति कर रहा है। इस अनुकम्पा हेतु श्री अग्रवाल को जितना साधुवाद दिया जावे वह कम ही है।

ठाकुर विक्रम सिंह का आगमन

ठाकुर विक्रम सिंह जी एक समय में आर्यसमाज के सशक्त उपदेशक रहे हैं तथा वर्तमान में एक उद्योगपति के रूप में अपनी उदार प्रवृत्ति के कारण सुविख्यात् हैं। न्यास का आपसे दूरभाष पर तो सम्पर्क था पर आपका उदयपुर १७वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पधारना प्रथम बार हुआ। न्यास की सभी गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर विशेष रूप से आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा व घूमते हुए कॉच के सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ का अवलोकन कर आपको अत्यधिक प्रसन्नता हुयी। आपने बड़ी उदारतापूर्वक १ लाख रु. की राशि न्यास को प्रदान की। न्यास परिवार की ओर से अनेकशः आभार। पूर्ण विश्वास है कि आपका ऐसा ही स्नेह भविष्य में भी न्यास को प्राप्त होता रहेगा।

प्रभु से प्रार्थना है कि तीनों महान् व्यक्तित्वों को निरामय दीर्घायुष्य प्रदान करें, ताकि ये परोपकार के कार्य करते रहें।

thearyasamaj.org

१७ वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१४
पधारे हुए भजनोपदेशकगण

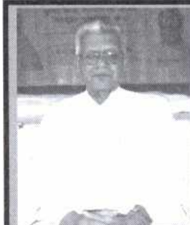
श्री सत्यपाल मधुर

श्री कैलाश 'कर्मठ'

श्री नरेश दत्त आर्य

श्री सत्यपाल सरल

श्री भजन लाल आर्य

श्री मामचन्द आर्य पथिक

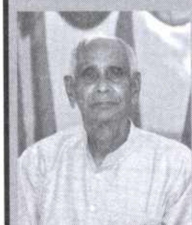
श्री बृजपाल कर्मठ

श्री सुखपाल आर्य प्रभाकर

श्री विक्रमदेव आर्य

श्री हरि सिंह आर्य

श्री नत्था राम आर्य

श्री नारायण सिंह आर्य

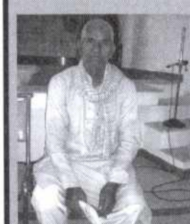
श्री कृष्ण लाल

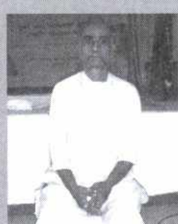
श्री दीपचन्द

श्री मोहन लाल आर्य

श्री राम रख आर्य

श्री आजाद लहरी

श्री ओमप्रकाश राघव

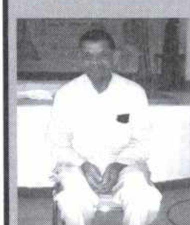
श्री ज्ञानेन्द्र तेवतिया

श्री सुखपाल विश्वकर्मा

श्री सुभाष आर्य

श्री नारायण सिंह

श्री रमेश चन्द्र स्नेही

श्री राज कुमार

श्रीमती शकुन्तला आर्या

श्री नरेन्द्र दत्त आर्य

श्री सुनील आर्य

श्री अजय आर्य

आर्य तपस्वी सुखदेव

श्री सत्यकाम ब्रह्मचारी

thearyasamaj.org

१७ वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव २०१४ भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ

इस बार महोत्सव का कार्यक्रम अखिल भारतीय भजनोपदेशक परिषद् के सान्निध्य में सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. सोमदेव शास्त्री के अतिरिक्त स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, आर्य तपस्वी सुखदेव व अनेक संन्यासीगण एवं चालीस से अधिक भजनोपदेशकों ने भाग लिया। भजन द्वारा प्रस्तुतियाँ श्रोताओं के मन को आह्लादित कर गई। इस अवसर पर दो वयोवृद्ध भजनोपदेशकों का सम्मान किया गया। परिषद् की ओर से इन्हें ग्यारह-ग्यारह हजार रु. की नगद राशि अभिनन्दन पत्र, शॉल, श्रीफल आदि भेंट किए गए। आर्य जगत् के जिन उपदेशकों ने अपना संपूर्ण जीवन अनेक कष्ट सहकर के भी महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार में समर्पित कर दिया हो, वृद्धावस्था में उनको आर्थिक सम्बल प्रदान करना परिषद् का श्रेष्ठ कार्य है। इसकी निरन्तरता सुनिश्चित होनी चाहिए। महोत्सव में प्रातःकालीन यज्ञ और तीन सत्रों में प्रवचन भजन के कार्यक्रम होते थे जिनकी व्यापक रूप से सराहना की गई। महोत्सव की कुछ चित्रमय झलकियाँ यहाँ प्रस्तुत की जा रही हैं।

thearyasamaj.org

समाचार

१०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

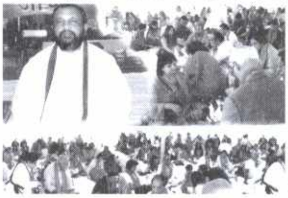

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में विदेश में दूसरी बार १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन कनाडा के आर्य समाज मरखम, टोरण्टो के विशाल प्रांगण में सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने जहाँ गायत्री के महत्व को समझा वहीं यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात किया। - सूर्यकान्त मिश्रा

सामवेद पारायण यज्ञ एवं संगीतमय वेद कथा का भव्य आयोजन

आर्य समाज मान टाउन एवं महिला आर्य समाज सवाई माधोपुर के संयुक्त तत्वावधान में २३ से २८ सितम्बर तक उक्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मथुरा से पधारी बहिन सविता आर्य एवं दिल्ली से पधारी स्मृति आर्य ने इस यज्ञ को सुन्दरता के साथ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर श्री सोमेश चन्द्र माहेश्वरी की ओर से सत्यार्थ प्रकाश का निःशुल्क वितरण हुआ। - रामजी लाल आर्य, मंत्री

श्रीमती अरुणा सतीजा को सम्मानित किया गया

जयपुर की बहिन श्रीमती अरुणा सतीजा को राजस्थान सरकार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा उत्कृष्ट व उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न, श्रीफल एवं शॉल ओढ़ाकर श्री अरुण चतुर्वेदी जी, मंत्री, राजस्थान सरकार के करकमलों द्वारा सम्मानित किया गया। सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से बहिन जी को हार्दिक बधाई।

ध्यान शिविर सम्पन्न

आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में आचार्य सानन्द जी के सानिध्य में १६ से २१ सितम्बर २०१४ तक ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पचास शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के समापन के अवसर पर संभागियों ने अपने-अपने अनुभव सुनाये। जिज्ञासाओं की शंकाओं का समाधान आचार्य जी ने कुशलतापूर्वक किया। - भंवरलाल आर्य

आर्य समाज, कुन्हाड़ी कोटा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ८ सितम्बर से १० सितम्बर तक प्रेरक स्वरूप में चला। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित दिनेश दत्त आर्य, आचार्य पंडित शिवदत्त पाण्डेय ने अपनी प्रेरक प्रस्तुतियाँ दीं। श्रीराम का पावन जीवन चरित्र इन उपदेशकों के माध्यम से श्रोताओं ने हृदयंगम किया। - डी.पी.मिश्रा, संरक्षक, आर्य समाज

आर्य समाज, सुमेरपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, सुमेरपुर जिला पाली का वार्षिकोत्सव एवं वेद प्रचार सप्ताह दिनांक १८ अगस्त से २४ अगस्त तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक व श्री कुलदीप आर्य भजनोपदेशक के प्रेरक प्रवचन तथा भजनोपदेश होते रहे। आर्य समाज के प्रधान श्री गणेश मल विश्वकर्मा ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन पंडित केशवदेव शर्मा ने किया। - गुलाब सिंह राजपुरोहित मंत्री, आर्य समाज

आर्य समाज का विद्यालयों में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कोटा द्वारा कोटा के विद्यालयों में वेद प्रचार कार्यक्रम किया गया जिसके समापन के अवसर पर सर्वोदय पेरामाउन्टेन स्कूल, विज्ञाननगर, कोटा में मुख्य वक्ता आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर नगर निगम कोटा की महापौर श्रीमती रत्ना जैन ने वेदों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अर्जुन देव चड्ढा प्रधान आर्य समाज जिला सभा कोटा ने की।

- अरविन्द पाण्डे, अध्यक्ष महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कोटा

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन सम्पन्न

योग निकेतन सभागार रोड नं. ७८, पश्चिम पंजाबी बाग, दिल्ली-२६ में ७ सितम्बर को राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन का आयोजन किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन भी इस अवसर पर सम्पन्न हुआ। - डॉ.अनिल आर्य

वेद मनीषा न्यास अलीगढ़ के निर्वाचन सम्पन्न

न्यास के संस्थापक संरक्षक पंडित शिव स्वरूपशर्मा व न्यास अध्यक्ष पंडित देवनारायण भारद्वाज की उपस्थिति में १७ अगस्त २०१४ को न्यास के निर्वाचन सम्पन्न हुए जिसमें पंडित शिवस्वरूप शर्मा जी द्वारा डॉ. पपेन्द्र आर्य, श्री योगेश शर्मा व श्री रामदीन आर्य पुरुषार्थी को क्रमशः न्यास का अध्यक्ष, सचिव व कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। सभी अधिकारियों को बहुत बहुत बधाई। - डॉ. पपेन्द्र आर्य

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ८** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- मधु चन्द्रिका (मुजफ्फरपुर), कौशल्या लीलड (देशनोक), द्रोपती तनेजा (फरीदाबाद), श्री रामावतार लाल (बिहार), श्री अरुण मुनि आर्य; वानप्रस्थ (बोडिया कमालपुर), श्री गोरधन देवीदास परियानी (अहमदाबाद), श्री विश्वमित्र आर्य (केलवाड़ा), श्री पवन सिंह राठौड़ (तारानगर), श्री महेश कुमार मधु सोनी (अहमदाबाद), श्री अमर मरेठा (जोधपुर)। **इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।**

thearyasamaj.org

हलचल

अपूरणीय क्षति

वैदिक धर्म-दर्शन-संस्कृति-साहित्य के प्रकाण्ड पंडित, प्रसिद्ध वैयाकरण, उच्चकोटि के विचारक एवं लेखक श्री राजवीर शास्त्री जी का निधन २५ सितम्बर २०१४ को ७६ वर्ष की आयु में हो गया।

शास्त्री जी का काफी समय से बीमार चल रहे थे। शास्त्री जी को सन् २००० में विक्रम प्रतिष्ठान, अमेरिका, सन् २००२ में आर्य समाज सांताक्रूज मुम्बई तथा सन् २००७ में गुरुकुल झज्जर द्वारा सम्मानित किया गया। शास्त्री जी ने अनेक वर्षों तक दयानन्द संदेश का सम्पादन किया। आपका निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें। इस दुःखद अवसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार गहन संवेदना प्रकट करता है।

आर्य समाज, आगरा द्वारा बन्दियों को सदुपदेश

आर्य समाज नाई की मंडी, आगरा द्वारा दो दिनों के उपदेश हेतु आमंत्रित आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी होशंगाबाद के साथ आर्यसमाज का एक १२ जनों का शिष्ट मंडल ६ सितम्बर को केन्द्रीय कारागार गृह पहुँचा। जिसमें ३००० कैदी वर्तमान में रहते हैं तथा कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें ३० वर्ष जेल में पूरे हो चके हैं। वहाँ के विशाल कक्ष में बड़ी संख्या में बन्दी भाईयों को आचार्य जी ने कर्मफल के बारे में बताया। आत्म नियंत्रण, सत्संग, विद्वानों का संसर्ग, स्वाध्याय, ईश्वर उपासना व आत्म निरीक्षण इन सभी का एक साथ अभाव व्यक्ति को पापाचार की ओर ले जाता है। वरिष्ठ जेलर श्री रत्नाकर जी को वैदिक साहित्य व ऋषि दयानंद का चित्र भेंट किया गया।

आर्य परिवार नाम से एक संस्था ग्रैंड होटल के वातानुकूलित हॉल में प्रति माह एक सत्संग रखती है। इसके स्वामी एक निष्ठावान् आर्यसमाजी श्री अरुण डंग जी हैं । यहाँ आचार्य जी ने मनुस्मृति के आधार पर बुद्धिजीवी वर्ग को वैदिक धर्म की मान्यताओं से परिचित करवाया। वयोवृद्ध विद्वान् श्री अर्जुन देव स्नातक जी ने इस की अध्यक्षता की। श्री रमाकांत सारस्वत, श्री सुधाकर गुप्ता जी, श्री राजीव खुराना, आर्या श्रीमती प्रेमा वर्मा माता जी पार्षद् आदि का सहयोग न मिलता तो कार्यक्रम इतना गरिमा पूर्ण होना मुश्किल था। सभी को धन्यवाद दिया गया । **- अश्विनी दुबे, अनुज आर्य, संयोजक, आगरा**

योगनिष्ठ संन्यासी व वैदिक विद्वान् पूज्य स्वामी दिव्यानंद सरस्वती जी का अमृत महोत्सव रविवार १६ नवम्बर २०१४ को योग निकेतन सभागार, पश्चिमी पंजाबी बाग दिल्ली में मनाया जाएगा। सभी आर्यजन आमंत्रित हैं। **- स्वामी आर्यवेश**

महर्षि दयानन्द जीवन प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा दशहरा मेला २०१४ में प्रदर्शनी लगायी गयी। जिसे धार्मिक प्रदर्शनी वर्ग में नगर निगम, कोटा द्वारा प्रथम घोषित किया गया। यह हर्ष और गौरव का विषय है। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा के समस्त पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई।

प्रतिस्वर

पत्रिका में प्रकाशित लेख बहुत ही गंभीर, प्रामाणिक, शिक्षाप्रद, अनेकों के जीवन को बदल देने वाले, आर्य समाजियों से भिन्न लोगों के लिए भी आवश्यक पठनीय, रुचिकर, समसामयिक विषयों से ओतप्रोत संभाल कर रखने योग्य होते हैं। गुरुकुल, हरिपुर के पुस्तकालय में ओड़ीसा व ओड़ीसा से बाहर के सज्जन नियमित रूप से आते रहते हैं। यहाँ के सम्माननीय आचार्यों का परिचय पूरे ओड़ीसा में है। गुरुकुल में बाहर से लोगों का आना जाना लगा रहता है। यहाँ आने वाले लोग ऐसी पत्रिका से परिचित हों, पुराने अंकों के लेखों को वे पढ़ें। इस दृष्टि से पत्रिका के सभी पुराने अंक भिजवाने की व्यवस्था करने का श्रम करें।

- सुदर्शन देव आचार्य, संचालक, गुरुकुल हरिपुर

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल ने साहित्य में योगदान हेतु कृष्ण कुमार यादव को किया सम्मानित

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरी नाथ त्रिपाठी ने साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए इलाहाबाद परिक्षेत्र के निदेशक, डाक सेवाएँ श्री कृष्ण कुमार यादव को सम्मानित किया।

उक्त सम्मान श्री यादव को मिर्जापुर में आयोजित एक कार्यक्रम में ५ अक्टूबर २०१४ को प्रदान किया गया। राज्यपाल ने शॉल ओढाकर और सम्मान पत्र देकर श्री यादव को सम्मानित किया। गौरतलब है कि सरकारी सेवा में उच्च पदस्थ अधिकारी होने के साथ-साथ साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी चर्चित श्री यादव की अब तक कुल ७ पुस्तकें 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह, २००५) 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध-संग्रह, २००६ व २००७), 'India Post Glorious Years' (२००६), 'क्रांति-यज्ञ' '१८५७-१९४७ की गाथा (संपादित, २००७),' जंगल में क्रिकेट' (बाल-गीत संग्रह-२०१२) एवं '१६ आने १६ लोग' (निबंध-संग्रह, २०१४) प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके व्यक्तित्व-कृतित्व पर एक पुस्तक 'बढ़ते चरण शिखर की ओर- कृष्ण कुमार यादव' (सं. डॉ० दुर्गाचरण मिश्र, २००९, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद) भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

उक्त अवसर पर न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के कुलपति प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल, इग्नू के प्रो चांसलर प्रो. नागेश्वर राव, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पंजाब सिंह, भोजपुरी फिल्म अभिनेता कुणाल सिंह, पूर्व शिक्षा मंत्री सुरजीत सिंह डंग सहित तमाम साहित्यकार, शिक्षाविद्, संस्कृतिकर्मी व अधिकारीगण मौजूद रहे।

thearyasamaj.org

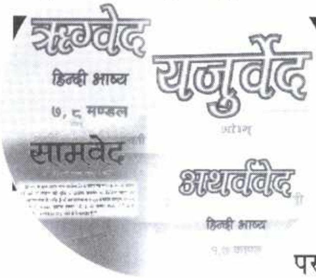

वेद परिचय

प्रत्येक सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए जो ज्ञान प्रदान करता है वह वेद ही है। वेद का अर्थ है ज्ञान जिसका आदि प्रदाता परमात्मा है, जिसने इस सृष्टि के आरम्भ में ही पूर्वजन्म के सर्वाधिक निर्मल हृदय एवं प्रबुद्ध चार ऋषियों को अर्थात् अग्नि नाम वाले ऋषि को ऋग्वेद, वायु नाम वाले ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य नाम वाले ऋषि को सामवेद तथा अंगिरा नाम वाले ऋषि को अथर्ववेद का समाधि अवस्था में ज्ञान प्रदान किया। ऋग् में ज्ञान की, यजुष् में कर्म की, साम में उपासना की तथा अथर्व में विज्ञान की प्रधानता है। ज्ञान तो समुद्र के जल भंडार सदृश एक ही है किन्तु विषय प्रस्तुति के कारण ज्ञान के चार भेद हो गए हैं।

वेद ईश्वरीय वाक् अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान है न कि मानव रचित पुस्तक। इसकी भाषा वैदिक भाषा या वैदिक संस्कृत है जो ज्ञान के समान ही ईश्वरीय है, ईश्वर प्रदत्त है। अतः वेदवाणी देववाणी भी है। वेदों के वाक्य ऋचाएँ अर्थात् मंत्र कहलाते हैं, श्लोक नहीं। श्लोक संस्कृत के पद्य होते हैं जिनके रचयिता मानव कवि होते हैं। वेदों में सृष्टि का संपूर्ण ज्ञान बीज रूप में होता है जिसका विस्तार, विकास मानव उसी बीज रूप में ,अर्थों को समझकर, भिन्न-भिन्न प्रकार के गर्भित अर्थों को प्रकट कर करता है। ऐसे अर्थ द्रष्टा व्याख्याता महामानव ऋषि कहलाते हैं। ऋग्वेद के १० मंडल, १०१८ सूक्त तथा १०५८६ मंत्र हैं। यजुर्वेद के ४० अध्याय तथा १६७६ मंत्र हैं। सामवेद पूर्वार्चिक ६ अध्याय, मंत्र ६४०, उत्तरार्चिक २२ अध्याय १२२५ मंत्र, महानाम्नार्चिक १० मंत्र- योग १८७३ मंत्र। अथर्ववेद २० काण्ड, ७३१ सूक्त, मंत्र ५६७७ हैं। चारों वेदों की कुल मंत्र संख्या २०४१५ हैं तथा शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ऋचाओं का परिमाण २४००० बृहती छन्द तुल्य है जो ३६ अक्षरों का होता है। अतः सभी ऋचाओं का योग ८६४००० अक्षर होता है। वेदों की उत्पत्ति को आज विक्रम संवत् २०६४ में १९६०८५३१०८ वर्ष हो रहे हैं। यही सृष्टि/जगत् उत्पत्ति का काल है।

वेद विषयक कुछ वाक्य ये हैं। वेद ईश्वरीय वाक् है। वैदिक संस्कृत अर्थात् वेद संहिताओं की भाषा तथा अर्थ अभिन्न हैं। वैदिक भाषा का मूल उद्भव स्थान परमात्मा है, मानव नहीं। प्रत्येक मंत्र पर देवता (प्रतिपाद्य विषय) ऋषि मंत्रद्रष्टा अर्थसाक्षात्कर्त्ता तथा प्रचारक; छंद, गायत्री, त्रिष्टुप आदि की व्यवस्था स्वर (षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाद- ७ स्वर) आदि का अंकन होता है। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ ऐतरेय, यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ शतपथ, सामवेद का उपवेद गन्धर्ववेद तथा ब्राह्मण साम एवं अथर्ववेद का उपवेद अर्थवेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थ गोपथ है। ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद, आरण्यक आदि ऋषि मुनियों की रचनाएँ हैं। वेद की संहितायें ही वेद हैं। शिक्षा का कल्प, व्याकरण, निघण्टु, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये छह वेदांग हैं। कपिल ऋषि का सांख्य, पतंजलि का योग, गौतम का न्याय, कणाद का वैशेषिक, जैमिनि का पूर्व मीमांसा और वादरायण का वेदान्त ये छः दर्शन ग्रन्थ हैं। ऋषि मुनियों द्वारा ईश्वर व जीव, प्रकृति विषयक गहन चिन्तन के ग्रन्थ उपनिषद कहलाते हैं जिनमें प्रामाणिक ११ हैं। यथा ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर, बृहदारण्यक और छान्दोग्य। जो भी वेद से अतिरिक्त ग्रन्थ हैं वे परतः प्रमाण हैं। अर्थात् जो वेद सम्मत हैं। वैदिक मत से विरुद्ध विचार वाले ग्रन्थ अवैदिक हैं। वेद स्वतः प्रमाण्य हैं।

वेदों में एक ईश्वर की ही उपासना है। सृष्टि रचयिता, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार सब सत्यविद्याओं और पदार्थ विद्याओं का आदि मूल परमेश्वर है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है जिसका पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है। वेद में किसी काल विशेष का, ऐतिहासिक वृत्त का, हिमालय, आल्पस, भारत, अमरीका आदि का गंगा, सतलज, वोल्गा, अमेजन, टेम्स आदि नदियों का नाम नहीं है। इनमें प्राणिमात्र के हित की बात है। किसी स्थान व्यक्ति क्षेत्रविशेष के प्रति कोई पक्ष नहीं है। केवल सत्य के प्रति आग्रह एवं असत्य का खण्डन है। परमात्मा सृष्टि का निर्माण यथोचित् रूप से करता है। उसके ज्ञान निर्माण-कौशल एवं न्याय में कोई अधिकतम न्यूनता नहीं है। इसी तरह वेद भी जो उसी का ज्ञान है, उसी की तरह निर्मल एवं पूर्ण ज्ञान है।

thearyasamaj.org

ऐसे पूर्ण ईश्वरीय ज्ञान भंडार पवित्र वेद के अनुयायी प्राचीन काल से ऋषिगण, आर्यजन, राम एवं कृष्ण थे। आधुनिक काल में विदेशी, वेदज्ञानशून्य, मद्य-मांसाहारी अरब, ईरान यूरोप के आक्रामक साम्राज्यवादी अवैदिक मतानुयायियों के अत्याचारी शासन एवं मतों मजहबों के कदाचारों से त्रस्त आर्यों की सब काल में निवास भूमि भारत को पुनः विश्व में वैदिक ज्ञान एवं सदाचरण का मार्ग दिखाने के लिए विश्व उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक सम्पदा का पुनः उद्धार कर धर्म एवं मजहब के नाम पर अमानवीयता, हिंसा एवं कदाचार के प्रचार-प्रसार करने वालों, पाखण्ड- मिथ्या विश्वासों अबौद्धिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक शोषणकर्ताओं के विरुद्ध खण्डन एवं संघर्ष की पताका फहराई। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के पुनर्निर्माण हेतु व्याख्यानों, शास्त्रार्थों एवं भारतवर्ष के अधिकांश भूभाग में भ्रमण तथा सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं संस्कार विधि जैसे अमूल्य वैचारिक आचार परक क्रान्तिकारी ग्रन्थ रत्नों का निर्माण कर विश्व हितकारी श्रेष्ठ पुरुषों में प्रथम स्थान के अधिकारी बने। वेद ज्ञान का प्रतिनिधि सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ विश्व के सभी मानवों को सच्चा मानव बनाने का एकमात्र ग्रन्थ है। साथ ही महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित संस्था आर्य समाज महर्षि की विचार-आचार प्रणाली का प्रचारक भारत एवं विश्व के अनेक देशों में जनता का सन्मार्ग पर लाने में कार्यरत् अग्रणी संगठन है। आईये! हम सब मिलकर सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें, पढ़ावें, सुनें, सुनावें तथा करोड़ों अरबों तक उन उनकी भाषा में पहुँचावें तथा आर्य समाज संस्था का विस्तार कर उसके झण्डे तले महिला, पुरुषों को लावें तथा मानव ही नहीं प्राणी मात्र एवं वनस्पति जगत् का कल्याण करें।

आर्य डॉ.मदन मोहन जावलिया
२५२ चम्पानगर, गूर्जर की थड़ी
जयपुर-३०२०१९

❑❑❑

मेवाड़ के लाडले सपूत, जन-जन में लोकप्रिय, जुझारुपन व कर्मठता की पहचान, न्यास को सदैव सहयोग प्रदान करने वाले माननीय गुलाबचन्द जी कटारिया के राजस्थान के गृहमन्त्री बनने हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४० ₹

प्राप्ति स्थल

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप ''५.६X९.०'' पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

उपहार स्वरूप कलैण्डर देने की तिथि बढ़ाई गई

दिसम्बर १४ तक सत्यार्थ सौरभ के आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप दिया जावेगा (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला)। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया गया है।

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

thearyasamaj.org

राशि फल और समाचार पत्र

सुरेश चिपलूनकर

'यदि ज्योतिष कोई शास्त्र या विज्ञान नहीं है तो विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ और अखबार क्यों राशि-भविष्य आदि छापते हैं?'

यह प्रश्न कई बार हमसे लोगों ने किया है, उसके जवाब के लिये पहले एक मजेदार कथा सुनें- इंग्लैंड के एक स्कूल में मैडम ने बच्चों से पूछा कि अब तक पृथ्वी पर सबसे महान् विभूति कौन सी हुई है, यदि यह सवाल कोई बच्चा बता दे तो मैं उसे दस डालर दूँगी। कई बच्चों ने कई प्रकार के जवाब दिये, जैसे आइंस्टीन, गैलीलियो, सेंट थामस, सेंट पीटर, मदर टेरेसा आदि, लेकिन मैडम ने सभी को नकार दिया। फिर एक गुजराती बच्चा बोला- मैडम मेरा जवाब है 'ईसा मसीह'। मैडम ने खुश होकर कहा- वेलडन बच्चे एकदम सही जवाब, ये लो दस डालर। मुझे खुशी है कि तुमने एक भारतीय होकर भी राम और कृष्ण का नाम नहीं लिया और जीसस का नाम लिया।

गुजराती बच्चा बोला- मेरा दिमाग भी जवाब में 'कृष्ण' ही कहता है, **लेकिन धंधा तो धंधा है।**

ठीक इसी प्रकार अखबारों और पत्रिकाओं के लिये भी ज्योतिष सम्बन्धी समाचार, भविष्यवाणियाँ, विज्ञापन, तस्वीरें आदि लगातार छापना उनकी व्यवसायगत मजबूरी है। भारत की जनसंख्या यदि एक अरब बीस करोड़ भी मान लें, तो औसतन बारह राशियों के हिसाब से एक राशि के दस करोड़ लोग तो होंगे। अब रोजाना भविष्यवाणी में कुछ भी ऊटपटाँग लिखा भी जाये तो जाहिर सी बात है कि लाखों व्यक्तियों पर वह कथन सही ही बैठेगा (Law of Probability) किसी का प्रमोशन होता है, किसी की दुर्घटना होती है, किसी का विवाह तय होता है, कोई यात्रा करता है, किसी को धंधे में नफा-नुकसान होता है, इसमें कोई नई या वैज्ञानिक बात नहीं है।

अखबारों या पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली भविष्यवाणियाँ राशि आधारित होती हैं, जाहिर है कि वे पूरी तरह से अवैज्ञानिक और सिर्फ अनुमान भर हैं, क्योंकि उसमें लग्नराशि, ग्रहयोग या कुंडली स्थान बल आदि पर विचार नहीं किया जाता। यहाँ तक कि अग्रगामी और आधुनिक कहे जाने वाले कई अखबार भी ये भविष्यवाणियाँ आदि छापते रहते हैं, क्योंकि ये धंधे का सवाल है, यदि अखबार मालिक तर्कबुद्धि से विचार करने लगें तो उन्हें लाखों रुपये रोजाना का नुकसान हो सकता है। 'सिर्फ सिद्धांतवाद से काम नहीं चलता, धंधा-पानी और कमाई ज्यादा महत्वपूर्ण है।'

न्यूयार्क टाइम्स और अन्य पाश्चात्य अखबार भी इस प्रकार की राशियाँ आदि छापते रहते हैं। सिगरेट के पैकेट पर छपी चेतावनी को नजरअंदाज करके भी करोड़ों लोग लगातार धूम्रपान करते ही रहते हैं, यदि उसी प्रकार सभी ज्योतिषी यदि कुंडलियों पर यह छापने लगें कि 'कुंडली के आधार पर भविष्य पर विश्वास करना मूर्खता है', तब भी उनकी कमाई में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लोकसत्ता के सम्पादक श्री माधव गड़करी ने खुद एक बार यह स्वीकार किया था कि अखबार में छपने वाला राशि भविष्य उन्होंने कई बार उलट-पुलट कर वही-वही वाक्य अलग-अलग बार दोहरा कर छाप दिये। लोग उन भविष्यवाणियों को पढ़ते हैं एक आनंद लेने के तौर पर। यदि उसमें व्यक्ति के पक्ष का कुछ लिखा हो तो वह खुश हो जाता है, विपक्ष का कुछ लिखा हो तब भी वह उसे खास महत्व नहीं देता। इसलिये सिर्फ अखबारों में या

thearyasamaj.org

यत्र-तत्र ज्योतिष के बारे में लिखा जाता है यह कहकर ज्योतिष को विज्ञान या महान् शास्त्र नहीं कहा जा सकता। ज्योतिष के एक पक्ष का तो मैं भी समर्थन कर सकता हूँ, वह पक्ष है 'इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव'। एक अच्छा ज्योतिषी एक अच्छा मनोवैज्ञानिक होता है, बल्कि होना भी चाहिये। भविष्य के गर्भ में क्या छुपा है यह कोई नहीं बता सकता चाहे वह कितना ही महान् क्यों न हो। लेकिन भागदौड़ भरी जिंदगी और निरन्तर संघर्षों से एक सामान्य आदमी घबरा जाता है, कई बार निराश-हताश हो जाता है (दुःख, परेशानियाँ, कष्ट लगभग ९५ प्रतिशत लोगों के जीवन में होते ही हैं) तब उस वक्त वह आसान रास्ते के तौर पर ज्योतिषी के पास जाता है। ज्योतिषी उसे उसके भविष्य के बारे में कुछ (बल्कि अधिकतर) अच्छा बताकर उसे दिलासा देते हैं, 'अगले एक वर्ष तक तुम पर शनि-मंगल का साया है', या फिर 'आप मेहनत तो बहुत करते हैं लेकिन राहु-केतु आपको सफल होने से रोक रहे है' आदि कहकर उसे मनोवैज्ञानिक धैर्य देने की कोशिश करते हैं और उसमें सफल भी होते हैं, क्योंकि आमतौर पर ज्योतिषी से मिलने के बाद व्यक्ति में एक स्थैर्य का भाव आ जाता है 'कि अपनी किस्मत ही खराब है इसलिये यह हो रहा है, लेकिन महाराज ने कहा है कि अगले एक-दो साल में स्थिति बदलेगी', फिर वह लगातार संघर्ष करता जाता है, अपनी तरफ से कुछ न कुछ उपाय करता ही है, **कभी वह सफल हो जाता है तो क्रेडिट ज्योतिषी को देता है, और पुनः असफल हो जाता है तो ज्योतिषी को कभी दोष नहीं देता, अपनी किस्मत को देता है।** यह मानव स्वभाव है, कि कष्टों में जहाँ से उसे मानसिक आधार मिले उसे वह अपना मान लेता है। उसके दुःख के सामने उसकी सामान्य तर्कबुद्धि भी काम करना बन्द कर देती है और फिर वह छोटी-छोटी बातों के लिये भी ज्योतिषी के चक्कर लगाने लगता है।

❑❑❑

साभार- अन्तर्जाल

सत्यार्थप्रकाश पहेली-१०

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

ध	१	रा	१	२ नि		२	न	■	३	प्त
■	क	४	■	५ नि		५	र	■	६	ल
७ य		■	८ भ		८ वा		■	९	९	लु

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो धर्म ही में प्रकाशमान और अधर्म से रहित धर्म ही का प्रकाश करता है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम है।
२. जो व्यक्ति अर्थात् आकृति, म्लेच्छाचार, दुष्टकामना और चक्षुरादि इन्द्रियों के विषयों के पथ से पृथक् है इससे ईश्वर का नाम है।
३. जो सत्योपदेशक सकलविद्यायुक्त सब धर्मात्माओं को प्राप्त होता और धर्मात्माओं से प्राप्त होने योग्य छल कपटादि से रहित है, इसलिये उस परमात्मा का नाम है।
४. जो वेद द्वारा सब विद्याओं का उपदेष्टा और वेत्ता है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम है।
५. जिसका आकार कोई भी नहीं और न कभी शरीर धारण करता है, इसलिये परमेश्वर का नाम है।
६. जो जगत् के सब पदार्थ और जीवों की संख्या करता है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम है।
७. जो सब प्राणियों के कर्मफल देने की व्यवस्था करता और सब अन्यायों से पृथक् रहता है, इसलिये परमात्मा का नाम है।
८. जो समग्र ऐश्वर्य से युक्त वा भजने के योग्य है, इसीलिये उस ईश्वर का नाम है।
९. जो अभय का दाता, सत्याऽसत्य, सर्वविद्याओं का जानने, सब सज्जनों की रक्षा करने और दुष्टों को यथायोग्य दण्ड देने वाला है, इससे परमात्मा का नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- ''अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ'' एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर २०१४

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द का हिन्दी को योगदान

गतांक से आगे ....

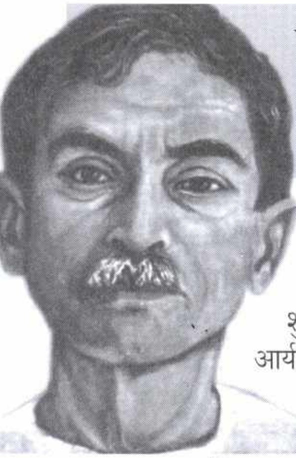

हिन्दी गद्य भी आर्य-समाज की अभिव्यक्ति से अछूता नहीं रहा। प्रेमचन्द्र का प्रारम्भिक जीवन तथा शुरू के उपन्यास तथा कहानियाँ आर्य समाज से अभिभूत रही हैं। उन्होंने आर्य-समाज के कारण ही शिवरानी देवी से विधवा-विवाह किया था। प्रेमचंद ने ऋषि का महत्व प्रतिपादन इन शब्दों में किया था **'स्वामी दयानन्द सरस्वती सदी के प्रथम पुरुष थे जिन्होंने महिलाओं को वेदाधिकार दिलाया। धर्म का विशुद्ध रूप प्रस्तुत किया। मैं उनके विचारों से पर्याप्त प्रभावित हूँ।'**

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा कि 'ऋषि दयानन्द के नेतृत्व में आर्य समाज ने रूढ़िवादी सनातनियों से हिन्दू धर्म पर आक्रमण करने वाले ईसाईयों से और देश में फैले अनेक धार्मिक सम्प्रदायों से एक साथ लोहा लिया। उन दिनों शास्त्रार्थों की धूम मच गई। उत्तर-प्रत्युत्तर के कटाक्षों और व्यंग्यों से सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ भरी रहती थीं और हिन्दी का भावी गद्य नवीन शक्तियों से सुसज्जित हो रहा था। **इन वाद-विवादों ने भाषा को बहुत समृद्ध किया और प्रौढ़ता प्रदान करने में सहायता पहुँचाई।** प्रथम यूरोपीय महायुद्ध तक इस देश की बड़ी शक्ति थी। इसने शिक्षा को, साहित्य को और समूची संस्कृति को बहुत कुछ प्रदान किया तथा प्रभावित किया। **स्वामी दयानन्द और उनके शिष्यों ने हिन्दी तथा संस्कृति को नव-जीवन दिया और हिन्दी संस्कृति के अध्ययन को बल।'**

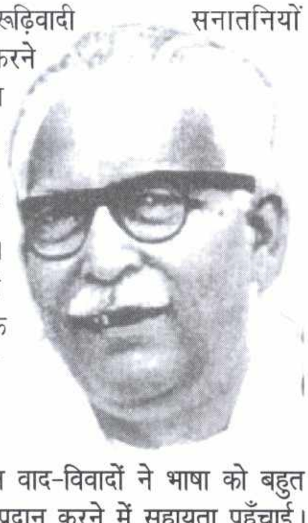

वर्तमान हिन्दी साहित्य में आत्मकथा को एक स्वतन्त्र विधा का स्वरूप प्रदान करने वाले डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' ने लिखा- **'मैं किसी समय 'आर्यकुमार सभा' एवं आर्य समाज का सदस्य था। मेरे स्वतन्त्र चिन्तन पर दयानन्द का प्रभाव है। मैं ऋषि दयानन्द को एक महामानव तथा वेदों का उद्धारक मानता हूँ।'**

।हेन्दी के वर्तमान श्रेष्ठ आलोचक डॉ. नगेन्द्र ने स्वामी दयानन्द की देन को रेखांकित करते हुए लिखा कि 'दयानन्द सरस्वती सामाजिक सुधारों को वैधता देने के लिए वेदों की ओर उन्मुख हुए और उन्होंने अपने मत की पुष्टि करने के लिए वेदों का नया अर्थ भी दिया। धीरे-धीरे तर्क की संगति पर विशेष बल दिया जाने लगा। इससे रूढ़ियों को उच्छेदन करने में सुविधा हुई। फलतः परम्परावादी और धर्म सुधारक दोनों ही अतीत के गौरव को जाग्रत करने में सफल हुए, इससे भारतीयों को आत्मबोध हुआ और बराबरी के स्तर पर पश्चिम का सामना करने तथा स्वतन्त्रता की माँग करने का आत्मविश्वास मिला।'

इस प्रकार सर्वथा सुस्पष्ट है कि हमारे आधुनिक हिन्दी साहित्य ने आर्य समाज के प्रदेयों और ऋणों को उन्मुक्त रूप में स्वीकार किया और उन्हें सार्वजनिक मान्यता दी।

- डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे
डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•**सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

•सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

माता-पिता की सेवा

कथा सरित

एक बालक अपने माँ-बाप की खूब सेवा किया करता था। उसके दोस्त उससे कहते भी कि अगर इतनी सेवा तुमने भगवान की की होती तो तुम्हें भगवान मिल जाते। लेकिन इन सब चीजों से अनजान हो वह अपने माता पिता की सेवा करता रहा। एक दिन उसकी माँ-बाप की सेवा भक्ति से खुश होकर भगवान धरती पर आ गये। उस वक्त वह बालक अपनी माँ के पाँव दबा रहा था। भगवान दरवाजे के बाहर से बोले- 'दरवाजा खोलो बेटा। मैं तुम्हारी माता पिता की सेवा से प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देने आया हूँ।' बालक ने कहा- 'इन्तजार करो प्रभु मैं माँ की सेवा में लगा हूँ।' भगवान बोले- 'देखो मैं वापस चला जाऊँगा।' बालक ने कहा कि आप जा सकते हैं। भगवान मैं सेवा बीच में नहीं छोड़ सकता। कुछ देर बाद उसने दरवाजा खोला तो क्या देखता है भगवान बाहर खड़े थे। भगवान बोले लोग मुझे पाने के लिए कठोर तपस्या करते हैं पर मैं तुम्हे सहज ही मिल गया परन्तु तुमने मुझसे प्रतीक्षा करवाई। बालक ने जवाब दिया कि- 'हे ईश्वर जिस माँ-बाप की सेवा ने आपको मेरे पास आने को मजबूर कर दिया उन माँ-बाप की सेवा बीच में छोड़कर मैं दरवाजा खोलने कैसे आता? यही इस जिन्दगी का सार है। जिन्दगी में हमारे माँ-बाप से बढ़कर कुछ नहीं है। हमारे माँ-बाप ही हमें जिन्दगी देते हैं। यही माँ-बाप अपना पेट काटकर अपने बच्चों के लिए अपना भविष्य खराब कर देते हैं इसके बदले हमारा भी यह फर्ज बनता है कि हम उन्हें कभी दुःख न दें उनकी आँखों में आँसू कभी न आयें चाहे परिस्थिति जो भी हो, प्रयत्न कीजिएगा।

प्रस्तुति- सुरेश पाटोदी
नवलखा महल

❑❑❑

thearyasamaj.org

वैवाहिक जीवन

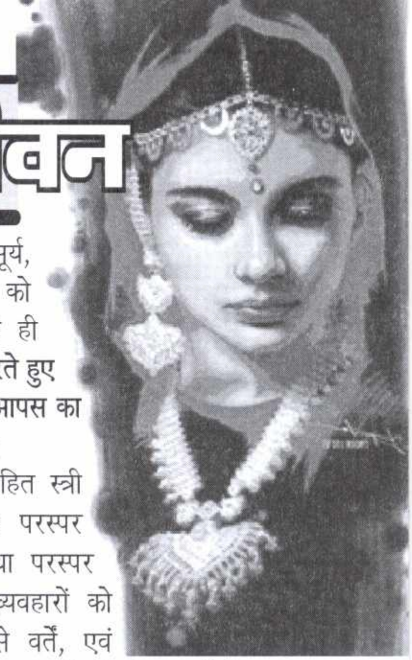

पति-पत्नी में पारस्परिक प्रेमः- गृहस्थाश्रम को स्वर्ग धाम बनाने में पति-पत्नी में अटूट प्रेम होना चाहिये। पत्नी को 'प्राण प्रिया' कहा जाता है। पुरुष उसके लिये 'प्राण प्रिय होता है। इसलिए मनुस्मृति कहती है-

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।१।।
यदि हि स्त्री न रोचते पुमांसं न प्रमोदयेत्।
अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्त्तते।।२।।
स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते।।३।। - मनु.३/६०-६

जिस कुल में स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री सदा प्रसन्न रहती है, उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है और जहाँ विरोध-कलह होता है, वहाँ दुःख-दरिद्रता और निन्दा निवास करती है। जो स्त्री अपने पति से प्रीति और पति को प्रसन्न नहीं करती तो पति के अप्रसन्न होने से काम उत्पन्न नहीं होता। **जिस स्त्री की प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्न होता है और उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दुःखदायक हो जाता है।**

वस्तुतः गृहस्थाश्रम की सफलता में पति पत्नी का आपसी सामञ्जस्य और सुदृढ़ प्रेम होना आवश्यक है। बिना एक दूसरे के सहयोग के गृहस्थ में सफलता नहीं मिलती। ऋषि लिखते हैं- **'जब विवाह होवे तभी स्त्री के साथ पुरुष और पुरुष के साथ स्त्री बिक चुकी। अर्थात् जो स्त्री और पुरुष के साथ हाव, भाव नखशिखाग्रपर्यन्त जो कुछ हैं वह वीर्यादि एक दूसरे के अधीन हो जाता है।'** - स.प्र. चतुर्थ समुल्लास

'स्त्री का पूजनीय देव पति और पुरुष की पूजनीया देवी पत्नी है। इसलिए स्त्री व पुरुष की प्रसन्नता के बिना कोई भी व्यवहार नहीं करें। पति के साथ पत्नी और पत्नी के साथ पति सदा प्रसन्न रहें।' -स.प्र. चतुर्थ समुल्लास

गृहस्थ जीवन में पति-पत्नी को सब कार्य सहयोग की भावना से प्रसन्नता पूर्वक करने चाहिए। महर्षि लिखते हैं- 'स्त्री वा पुरुष प्रसन्नता के बिना कोई भी व्यवहार न करें। इनमें बड़े अप्रियकारक व्यभिचार, वेश्या-परपुरुषगमनादि काम हैं। इनको छोड़ के अपने पति के साथ स्त्री और स्त्री के साथ पति सदा प्रसन्न रहें।' - स.प्र. चतुर्थ समुल्लास

इसलिए वेद में कहा है-

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजांस्याददे।
एवा स्त्रीणां च पुंसां च द्विषतां वर्च आ ददे।। - अथर्ववेद ७/१३/१

जैसे उदय होता हुआ सूर्य, नक्षत्र (तारों) के प्रकाश को हरण कर लेता है ऐसे ही **परस्पर विरोध व द्वेष करते हुए स्त्री-पुरुषों के तेज को आपस का विरोध नाश कर देता है।**

अर्थात् वेदानुसार, विवाहित स्त्री पुरुषों को चाहिये कि परस्पर समान वर्त्ताव रखें, तथा परस्पर विभित्सित वचनादि कुव्यवहारों को त्याग कर प्रेम भाव से वर्तें, एवं विषयासक्ति आदि निन्दित कर्मों को छोड़कर मैत्रीभाव रखा करें, विद्या व स्वच्छ वस्त्रादि से सुशोभित हुए अपनी उत्तम इच्छा और पराक्रमों को समर्थ व उन्नत रहें।

२. पति-पत्नी का अवियोग - महर्षि दयानन्द के अनुसार 'स्त्री-पुरुष का वियोग कभी भी नहीं होना चाहिए। मृत्यु से वियोग होने में तो हमारा कोई वश नहीं है पर दूर देश में यात्रार्थ जावें तो स्त्री को भी साथ रखें अर्थात् बहुत समय तक वियोग नहीं होना चाहिए।'

३. गृहस्थी होते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन- महर्षि दयानन्द, मनुस्मृति (३/४५ पूर्वार्द्ध, ५० उत्तरार्ध) श्लोक को उद्धृत करते हुए लिखते हैं-

ऋतुकालाभिगामी स्यात्स्वदारनिरतः सदा।
ब्रह्मचार्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्।।

'जो अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है, वह गृहस्थ भी ब्रह्मचारी के सदृश है।' - स.प्र. चतुर्थ समुल्लास

४. वेदादि शास्त्रों का नित्य स्वाध्याय करना- गृहस्थाश्रम में रहते हुए स्त्री-पुरुष को प्रतिदिन वेदादि सत्य शास्त्रों का स्वाध्याय करते रहना चाहिए। इसके महत्त्व को दर्शाते हुए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास में मनुस्मृति ४/१६,२० श्लोक - **'बुद्धिवृद्धिकराण्याशु.....।' यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति....।।'** उद्धृत किये हैं। शास्त्रों के अध्ययन से विद्या का विज्ञान बढ़ता जाता है तथा अविद्या का नाश होता है। आचार्य कपिल

thearyasamaj.org

ने कहा है- **'ज्ञानान्मुक्ति'** (सां.द.३/२३)
अर्थात् तत्त्वज्ञान से मुक्ति होती है। जीवन के अंतिम क्षण तक स्वाध्याय न छूटे, इसीलिए आचार्य गृहस्थाश्रम में प्रवेश से पूर्व, ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति पर **समावर्तन-संस्कार** के समय उपदेश करता है- "स्वाध्यायान्मा प्रमदः" अर्थात् स्वाध्याय से प्रमाद कभी मत करना। मनुष्य कभी भी पूर्ण ज्ञानी नहीं होता। वेदादि शास्त्रों के अध्ययन से उसके ज्ञान में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। महर्षि पतञ्जलि का कथन है-

'स्वाध्यायादिष्टदेवता सं प्रयोगः' - (योग दर्शन २/४४)
अर्थात् स्वाध्याय करने से ईश्वर के साथ संबंध होता है। स्वाध्याय करने से परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त होता है। यही अर्थ व्यास भाष्य में स्पष्ट किया है।

स्वाध्याय-योगसमपत्त्या परमात्मा प्रकाशते। (योग दर्शन १/२८)
अर्थात् स्वाध्याय और योग की समृद्धि से परमात्मा का प्रकाश होता है।

५. अर्थार्जन - महर्षि दयानन्द लिखते हैं- विवाह की इच्छा करने वाले कन्या और वर, युवावस्था को पहुँच और परस्पर एक दूसरे के धन की उन्नति को अच्छे प्रकार देखकर विवाह करे, नहीं तो धन के अभाव में दुःख की उन्नति होती है।
- (स.वि.गृहा. प्रकरण)

चाहे भोजन, छादन, जलपान आदि की जीविका भी अधर्म से सिद्ध हो सके वा प्राण जाते हों परन्तु जीविका के लिए धर्म कभी भी नहीं छोड़े। - (स.वि.गृहा. प्रकरण, मनु. ४/१५)

स्पष्ट है कि **गृहस्थी को अर्थार्जन धर्मानुसार ही करना चाहिए।**

६. शिष्टाचार और मधुर वाणी का प्रयोग- जिस गृहस्थ परिवार में आपस में या अन्यों के साथ शिष्टाचार और मधुर वाणी का प्रयोग किया जाता हो वही परिवार या गृहस्थाश्रम सदैव फलता फूलता है। शिष्टाचार की पहली शुरूआत अभिवादन 'नमस्ते' से होती है। दिन और रात में जब जब प्रथम मिलें या पृथक् हो तब तब प्रीति पूर्वक 'नमस्ते' एक

दूसरे को करें। सदा प्रिय सत्य, दूसरे के लिए हितकर बोले, अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा न बोले। दूसरे को प्रसन्न करने के लिए असत्य न बोले। जो कोई बुरा माने तब भी यदि उनके हित में कोई बात हो तो अवश्य बोले। क्योंकि संसार में कारण अकारण प्रशंसा करने वाले तो बहुत होते हैं। परन्तु सुनने में अप्रिय और कल्याणकारी बोलने और सुनने वाले व्यक्ति दुलर्भ होते हैं।

अच्छा व्यक्ति वह है जो मुख के सामने दोष कहे और सुने और परोक्ष में सदा गुणों का बखान करे अर्थात् पति-पत्नी आपस में बैठकर अपने गुण दोषों पर विचार कर लिया करें। सब के बीच में एक दूसरे की आलोचना न किया करें।
- (सत्यार्थ प्रकाश. ४ समुल्लास)

पति-पत्नी आपस में मीठी वाणी बोलें, पुत्र पिता का अनुव्रती हो और माता में श्रद्धा रखे, भाई-बहन, भाई-भाई और बहन-बहन आपस में द्वेष न कर प्रेम से रहें।

- संपादक- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१

❑❑❑

केवल वह वीर जियेगा

**वैराग्य छोड़ बाहों की विभा सँभालो
चट्टानों की छाती से दूध निकालो
है रूकी जहाँ भी धार शिलाएँ तोड़ो
पीयूष चन्द्रमाओं का पकड़ निचोड़ो
चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे
योगियों नहीं विजयी के सदृश जियो रे
छोड़ो मत अपनी आन सीस कट जाए
मत झुको अनय पर भले व्योम फट जाए
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है
मरता है जो एक ही बार मरता है
तुम स्वयं मृत्यु के मुख पर चरण धरो रे
जीना है तो मरने से नहीं डरो रे।।
उद्देश्य नहीं जन्म का कीर्ति या धन है
सुख नहीं धर्म भी नहीं न तो दर्शन है
विज्ञान ज्ञान बल नहीं न तो चिन्तन है
जीवन का अन्तिम ध्येय स्वयं जीवन है
सबसे स्वतंत्र रस जो भी अनघ पियेगा
पूरा जीवन केवल वह वीर जियेगा।**

कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर'

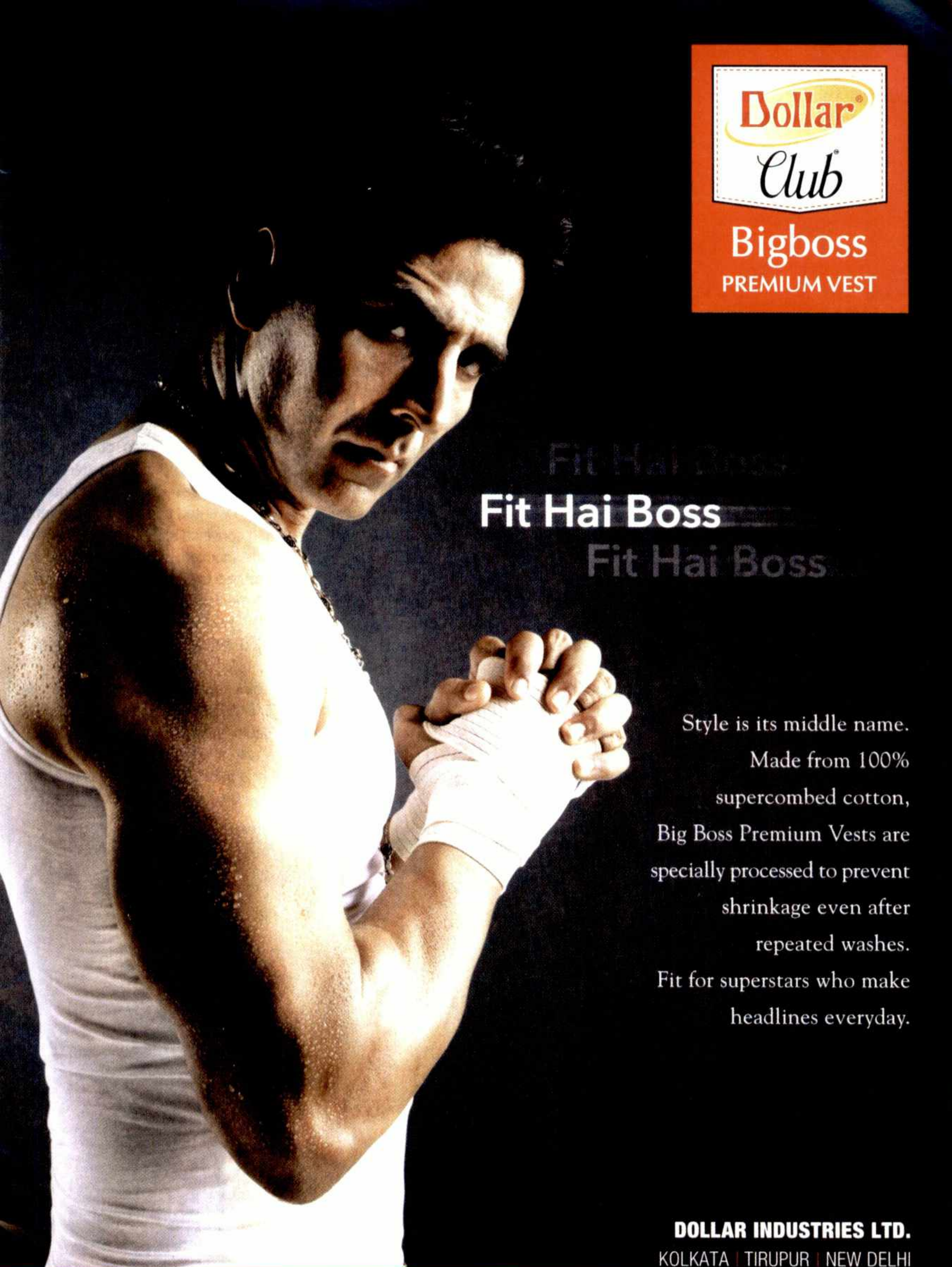
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Style is its middle name. Made from 100% supercombed cotton, Big Boss Premium Vests are specially processed to prevent shrinkage even after repeated washes. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI

thearyasamaj.org

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

बड़े-बड़े नगरों में एक-एक विचार करने वाली सभा का सुन्दर उच्च और विशाल जैसा कि चन्द्रमा है, वैसा एक-एक घर बनावें। उसमें बड़े-बड़े विद्यावृद्ध कि जिन्होंने विद्यासे सब प्रकार की परीक्षा की हो, वे बैठकर विचार किया करें।

– सत्यार्थप्रकाश – पृ. १५५

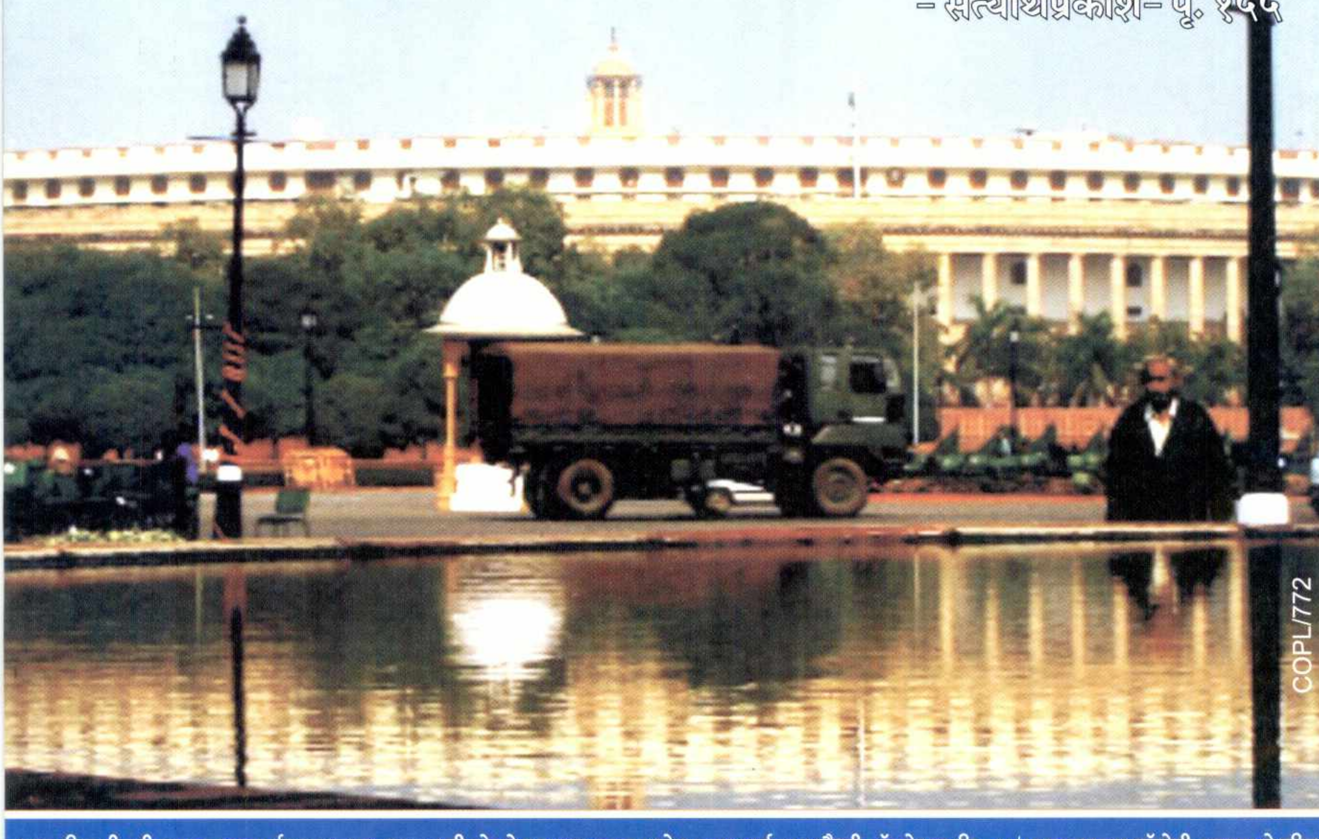

COPL/772

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य